INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS

(Rajasthan Administrative Service)

प्रारंभिक परीक्षा हेतु

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

भाग – 3

भारत का इतिहास + राजव्यवस्था

<u>प्रस्तावना</u>

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RAS (Rajasthan Administrative Service) प्रारंभिक परीक्षा हेतु** " को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Exams**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Order Link - **https://bit.ly/ras-pre-notes**

WhatsApp Link- **https://wa.link/bc7sin**

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

प्राचीनकालीन भारत

1. भारत के सांस्कृतिक आधार 1
   - सिन्धु एवं वैदिक कालः छठी शताब्दी ई. पू. की श्रमण परम्परा और नये धार्मिक विचार- आजीवक, बौद्ध तथा जैन
2. प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की उपलब्धियाँ 16
   - मौर्य, कुषाण, सातवाहन, गुप्त, चालुक्य, पल्लव एवं चोल
3. प्राचीन भारत में कला एवं वास्तु 42
4. प्राचीन भारत में भाषा एवं साहित्य का विकास 57
   - संस्कृत, प्राकृत एवं तमिल

मध्यकालीन भारत

1. अरबों का सिन्ध पर आक्रमण 62
2. सल्तनतकाल 65
   - प्रमुख सल्तनत शासकों की उपलब्धियाँ
   - विजयनगर की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ
3. मुगलकाल 80
   - राजनीतिक चुनौतियाँ एवं सुलह-अफगान, राजपूत, दक्कनी राज्य और मराठा
4. मध्यकाल में कला एवं वास्तु 84
   - चित्रकला एवं संगीत का विकास
5. भक्ति तथा सूफी आंदोलन 90
   - धार्मिक एवं साहित्यिक योगदान

आधुनिक भारत का इतिहास

(प्रारम्भिक 19वीं शताब्दी से 1964 तक)

1. आधुनिक भारत का विकास 96
   - यूरोपीय कम्पनियों का आगमन
   - मुग़ल साम्राज्य का पतन
   - मराठा साम्राज्य
   - गवर्नर, गवर्नर जनरल & वायसराय इत्यादि

2. राष्ट्रवाद का उदय 115
   - 1857 की क्रांति से पूर्व के विद्रोह
   - 1857 की क्रांति
   - बौद्धिक जागरण; प्रेस; पश्चिमी शिक्षा।
   - 19वीं शताब्दी के दौरान सामाजिक -धार्मिक सुधारः विभिन्न नेता एवं संस्थाएँ

3. स्वतंत्रता संघर्ष एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन 138
   - विभिन्न अवस्थाएँ, धाराएँ,
   - महत्वपूर्ण योगदानकर्ता एवं देश के अलग-अलग हिस्सों का योगदान

4. स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्र निर्माण- राज्यों का भाषायी पुनर्गठन 186
   - नेहरू युग में सांस्थानिक निर्माण, विज्ञान एवं तकनीकी का विकास

भारतीय संविधान, राजनीतिक व्यवस्था एवं शासन प्रणाली

1. संविधान सभा एवं ऐतिहासिक प्रष्ठभूमि 192
2. भारतीय संविधान की विशेषताएं 200
3. संवैधानिक संशोधन 204
4. उद्देशिका (प्रस्तावना) 210

5. मौलिक अधिकार	217
6. नीति के निदेशक तत्व	226
7. मूल कर्तव्य	230
8. राष्ट्रपति	236
9. प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्	257
10. भारतीय संसद	263
11. उच्चतम न्यायालय और न्यायिक पुनरावलोकन	274
12. निर्वाचन आयोग	281
13. नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक	285
14. नीति आयोग	287
15. केन्द्रीय सतर्कता आयोग	289
16. लोकपाल	295
17. केन्द्रीय सूचना आयोग	297
18. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग	302
19. भारत में लोकतांत्रिक राजनीति	303
20. गठबंधन सरकारें	308
21. राष्ट्रीय एकीकरण	312

वैदिक काल

- सिन्धु संस्कृति के बाद जो संस्कृति आयी उसे वैदिक संस्कृति सभ्यता कहा जाता है।
- इस संस्कृति की अवधि काल **1500-600 ई.पू.** माना जाता है।
- इस संस्कृति के जन्मदाता आर्य (श्रेष्ठ) लोग थे, अतः इसे आर्यों का काल भी कहा जाता है ।
- आर्यों का मूल निवास आल्प्स पर्वत का पूर्वी क्षेत्र (यूरेशिया) बताया जाता है ।
- **भारत में आर्यों की जानकारी ऋग्वेद से** मिलती है। **इसमें आर्य शब्द का उल्लेख 36 बार हुआ है।**

साहित्यिक स्त्रोत (Literary Sources)

- **ऋग्वेद** (Rigveda) वैदिक काल की रचना है।
- इसमें **10 मंडल** (Divisions) तथा **1028 सूक्त** (Hymns) हैं। इसे स्त्रोतों का संकलन' भी कहा जाता है।
- इसकी रचना 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. के मध्य हुई।
- इसके कुल 10 मंडलों में से दूसरे से सातवें तक के मंडल सबसे प्राचीन माने जाते हैं, जबकि प्रथम तथा दसवाँ मंडल परवर्ती काल के माने गए हैं। ऋग्वेद के दूसरे से सातवें मंडल को गोत्र मंडल (Clan Division) के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इन मंडलों की रचना किसी गोत्र (Clan) विशेष से संबंधित एक ही ऋषि (Sage) के परिवार ने की थी।
- ऋग्वेद की अनेक बातें फारसी भाषा के प्राचीनतम ग्रन्थ अवेस्ता (ईरान क्षेत्र से संबंधित) से भी मिलती हैं।
- गौरतलब है कि इन दोनों धर्म ग्रन्थों में बहुत से देवी-देवताओं और सामाजिक वर्गों के नाम भी मिलते-जुलते हैं।

मंडल	रचयिता
प्रथम मंडल	अनेक ऋषि
द्वितीय मंडल	गृहत्समद
तृतीय मंडल	विश्वामित्र
चतुर्थ मंडल	वामदेव
पंचम मंडल	अत्रि
षष्ठ मंडल	भारद्वाज
सप्तम मंडल	वशिष्ठ
अष्ठम मंडल	कण्व एवं अंगिरस
नवम मंडल	अनेक ऋषि
दसवाँ मंडल	अनेक ऋषि

पुरातात्विक स्त्रोत (Archaeological Sources)

1. कस्सी अभिलेख (1600 ई.पू.): इन अभिलेखों से यह जानकारी मिलती है कि ईरानी आर्यों की (Iranian Aryans) एक शाखा का भारत आगमन हुआ।
2. बोगजकोई (मितन्नी) अभिलेख (1400 ई.पू.): इन अभिलेखों में हित्ती राजा सुब्बिलिमा और मितन्नी राजा मतिऊअजा के मध्य हुई संधि के साक्षी के रूप में वैदिक देवताओं- इंद्र, वरुण, मित्र, नासत्य आदि का उल्लेख है।
3. चित्रित धूसर मृदभांड (Painted Grey Wares P.G.W.)।
4. उत्तर भारत में हरियाणा के पास भगवानपुरा में हुई खुदाई में एक 13 कमरों का मकान तथा पंजाब में तीन ऐसे स्थान मिले हैं जिनका संबंध ऋग्वैदिक काल से माना जाता है।

वैदिक काल

वैदिक काल को **दो भागों में बांटा** गया है -

(1) ऋग्वैदिक काल (1500-1000ई.पू

(2)उत्तरवैदिक काल (1000-600ई.पू.)

वैदिक साहित्य : एक दृष्टि में

- **ऋग्वेद-** यह **सबसे प्राचीन वेद** है। इसमें अग्नि, इंद्र, मित्र, वरुण आदि देवताओं की स्तुतियाँ संग्रहीत हैं।
- **सामवेद -** ऋग्वैदिक श्लोकों को गाने के लिए चुनकर धुनों में बाँटा गया और इसी पुनर्विन्यस्त संकलन का नाम 'सामवेद' पड़ा। इसमें दी गई ऋचाएँ उपासना एवं धार्मिक अनुष्ठानों के अवसर पर **स्पष्ट तथा लयबद्ध रूप से गाई** जाती थीं।
- **यजुर्वेद -** इसमें ऋचाओं के साथ-साथ गाते समय किये जाने वाले अनुष्ठानों का भी पद्य एवं गद्य दोनों में वर्णन है।
- यह वेद **यज्ञ-संबंधी अनुष्ठानों पर** प्रकाश डालता है।
- **अथर्ववेद -** यह वेद जनसामान्य की सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियों को जानने के लिए इस काल का सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसमें लोक परंपराओं, धार्मिक विचार, विपत्तियों और व्याधियों के निवारण संबंधी **तंत्र-मंत्र** संग्रहित हैं। **गोपथ ब्राह्मण अथर्ववेद से संबंधित है।**

वेदत्रयी - ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं सामवेद
संहिता - चारों वेदों का सम्मिलित रूप
उपनिषद - **108** (प्रामाणिक 12)
पुराण - 18

वेदांग - शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त (भाषा विगत), **छंद और ज्योतिष**

- इस काल में समाज का स्पष्ट विभाजन चार वर्णों- ब्राह्मण, क्षत्रिय (राजन्य), वैश्य और शूद्र में हो गया।
- इस काल में **यज्ञ** (Yajna) का महत्त्व अत्यधिक बढ़ गया, जिससे **ब्राह्मणों की शक्ति** में अपार **वृद्धि** हुई।
- इस काल में **वर्ण व्यवस्था** का आधार कर्म-आधारित (Profession-Based) न होकर **जन्म-आधारित** (Birth-Based) हो गया तथा वर्णों में कठोरता आने लगी।
- समाज में अनेक धार्मिक श्रेणियों (Religious Categories) का उदय हुआ, जो कि कठोर होकर विभिन्न जातियों (Castes) में बदलने लगी। अब व्यवसाय आनुवंशिक (Patrimonial) होने लगे।
- इस काल में समाज में अस्पृश्यता (Untouchability) की भावना का उदय नहीं हुआ था।

- आर्य मांसाहारी तथा शाकाहारी दोनों प्रकार के भोजन करते थे।
- गाय विनिमय का माध्यम
  अध्या शब्द का प्रयोग (गाय के लिए)

आर्थिक जीवन

- संस्कृति ग्रामीण
- घोड़ा प्रिय पशु
  दधिका - एक देवी अश्व
- कृषि योग्य भूमि उर्वरा अथवा क्षेत्र कहलाती थी।
- सीता या कुण्ड हल से जुती भूमि
- करीब, गोबर की खाद
- व्यापार-वाणिज्य प्रधानतः पणि वर्ग के लोग करते थे।
- पणि का अर्थ व्यापारी
- निष्क- विनिमय का माध्यम
  निष्क पहले आभूषण था बाद में सिक्के के रूप में प्रयोग किया जाने लगा।
- कुलाल - मिट्टी के बर्तन बनाने वाला

धर्म और धार्मिक विश्वासन

- आर्यों का सबसे प्राचीन देवता द्यौस
- द्यौस आर्यों के पिता
- ऋग्वैदिक काल में सबसे महत्त्वपूर्ण देवता इन्द्र था।
- ऋग्वेद में $\frac{1}{4}$ या 250 सूक्त इन्द्र को समर्पित
- इन्द्र युद्ध का देवता था।

उत्तर वैदिक काल

- इस काल का समय 1000 ई.पू. से 600 ई.पू. तक माना जाता है।
- इस काल का इतिहास ऋग्वेद के आधार पर विकसित साहित्यों से पता चलता है।
  ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद
- अथर्ववेद में परीक्षित को मृत्युलोक का देवता कहा गया है।
- राज्य के उच्च अधिकारी रत्नी
- विभाग के अध्यक्ष
- सेनानी - सेनापति ।
  सूत - रथसेना का नायक
  ग्रामणी- गांव का मुखिया
  संग्रहीता - कोषाध्यक्ष
  भागधुक – अर्थमंत्री
- शतपति संभवत 100 ग्रामों के समूह का अधिकारी होता था।
- श्रष्टिन- प्रधान व्यापारी
- माप की इकाईयां
- निस्ष्क, शतमान, पाद, कृष्णाल
- बाट की मूल इकाई
- समाज चार वर्गों में विभक्त
  ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र

उत्तर वैदिक काल :-

- इस काल में तीनो वेदों सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद के अतिरिक्त ब्राह्मण, अरण्यक, उपनिषद और वेदांगो की रचना हुई। ये सभी ग्रन्थ उत्तर वैदिक काल के साहित्यिक स्त्रोत माने जाते हैं ।
- **लोहे के प्रयोग** ने सामाजिक-आर्थिक एवं राजनैतिक जीवन में क्रांति पैदा कर दी। उत्तर वैदिक काल में आर्यों का विस्तार अधिक क्षेत्र पर इसलिए हो गया क्योंकि अब वे लोहे के हथियार का उपयोग जान गए थे।
- यज्ञ-विधान क्रिया उत्तर वैदिक काल की देन है। **राजसूर्य यज्ञ का प्रचलन उत्तर वैदिक काल में हुआ** । यह राज्याभिषेक से संबंधित था । इस यज्ञ के दौरान राजा रानियों के घर जाता था।
- अश्वमेध यज्ञ शक्ति का द्योतक था।
- उत्तर वैदिक काल में प्रजापति महत्त्वपूर्ण देवता हो गए ।
- **उत्तर वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित हो गई ।**
- **पुनर्जन्म की अवधारणा पहली बार ब्रह्दारणयक उपनिषद में आई है।**
- उत्तर वैदिक ग्रन्थ छन्दोग्य उपनिषद से **तीन आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ तथा वानप्रस्थ)** का उल्लेख मिलता है।
- उत्तर वैदिक काल में लोगों की जीविका का मुख्य आधार कृषि हो गई ।
- उत्तर वैदिक काल में खेत जोतने के हल को सिरा तथा हल रेखा को सीता कहा जाता था।
- **गोत्र प्रथा एवं गोत्र विवाह** उत्तर वैदिक सभ्यता की ही देन है गोत्र शब्द का संबंध गाय से है।
- शतमान और निष्क उत्तर वैदिक कालीन मुद्राएँ थी।
- भारत का सर्वाधिक प्राचीन दर्शन सांख्य दर्शन है जिसमें प्रकृति को मूल कहा गया है।
- प्रथम बार पक्की ईंटों का प्रयोग इस काल में कोशाम्बी नगर से मिलता है ।

प्रश्न - सुमेलित कीजिए -

सूची - I	सूची -2
(A) व्रीही	(i) गन्ना
(B) मुदग	(ii) चावल
(C) यव	(iii) मूंग
(D) इक्षु	(iv) जौं

कूट -

	a	b	c	d
(A)	i	ii	iii	iv
(B)	iv	iii	ii	i
(C)	iii	iv	i	ii
(D)	ii	iii	iv	i

उत्तर – D

छठी शताब्दी ई. पू. की श्रमण परम्परा

- श्रमण प्राचीन भारत में एक धार्मिक आंदोलन था जिसकी जड़े वैदिक धर्म में थी । इसने एक अलग रास्ता अपनाया, वैदिक हिंदू कर्मकांड और ब्राह्मणों के अधिकार, हिंदू धर्म के पारंपरिक पुजारी को खारिज कर दिया ।

- श्रमण तपस्वी थे जो अध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त करने के लिए एक गंभीर और आत्म-निंदा जीवन शैली जीते थे भिक्षु उनके लिए एक सामान्य शब्द है ।
- जैन धर्म बौद्ध धर्म का उदय श्रमण आंदोलन से हुआ ।

श्रमण शब्द का अर्थ -

- श्रमण शब्द श्रम एवं तप से मिलकर बना हुआ है, श्रमण जिसका अर्थ होता है, श्रम करने वाला, श्रमण परम्परा का पालन करने वाले लोग नास्तिक हुआ करते थे,। प्राचीन भारत में अध्यात्मिक प्रक्रिया में श्रम के मार्ग का अनुसरण करने वालों को श्रमण कहा जाता था। अध्यात्म की जड़ों को भारतीय समाज में मजबूत करने में श्रमण परम्परा का अहम योगदन रहा है।
- श्रमण परम्परा भारत में प्राचीन काल से जैन, आजीविक, चार्वाक, तथा बौद्ध दर्शनों में पायी जाती है। ये ब्राह्मण धारा से बाहर मानी जाती है एवं इसे प्रायः नास्तिक दर्शन भी कहते हैं।
- भिक्षु या साधु को श्रमण कहते हैं, जो सर्वविरत कहलाता है।
- श्रमण को पाँच महाव्रतों - सर्वप्राणपात, सर्वमृषावाद, सर्वअदत्तादान, सर्वमैथुन और सर्वपरिग्रह विरमण को तन, मन तथा कार्य से पालन करना पड़ता है।
- संस्कृत एवं प्राकृत में 'श्रमण' शब्द के निकटतम तीन रूप हैं - श्रमण, समन, शमन । श्रमण परम्परा का आधार इन्हीं तीन शब्दों पर है।
- 'श्रमण' शब्द 'श्रम' धातु से बना है, इसका अर्थ है 'परिश्रम करना।' श्रमण शब्द का उल्लेख वृहदारण्यक उपनिषद में 'श्रमणोऽश्रमणस' के रूप में हुआ है। अर्थात् यह शब्द इस बात को प्रकट करता है कि व्यक्ति अपना विकास अपने ही परिश्रम द्वारा कर सकता है।
- सुख-दुख, उत्थान-पतन सभी के लिए वह स्वयं उत्तरदायी है।

  'समन' का अर्थ है, समताभाव, अर्थात् सभी को आत्मवत् समझना, सभी के प्रति समभाव रखना। जो बात अपने को बुरी लगती है, वह दूसरे के लिए भी बुरी है। इसका स्पष्टीकरण आचारांगसूत्र एवं उत्तराध्ययनसूत्र में मिलता है।
- 'शमन' का अर्थ है अपनी वृत्तियों को शान्त रखना, उनका निरोध करना। अर्थात् जो व्यक्ति अपनी वृत्तियों को संयमित रखता है वह महाश्रमण है।

उत्पति

- छठी शताब्दी ईसा पूर्व भारत में कई श्रमण आंदोलन फलने फूलने लगे । श्रमण वैदिक हिंदू धर्म के साथ सह अस्तित्व में था किन्तु इससे अलग था ।
- श्रमण मूल रूप से भारत में भी किसी तपस्वी, वैरागी या धार्मिक अभ्यासी को संदर्भित करने के लिए इस्तेमाल किया गया था ।
- श्रमण भारत में दो चरणों में विकसित हुआ : पक्काबुद्ध, एकान्त तपस्वी की परंपरा, "अकेला बुद्ध" जो दुनिया को पीछे छोड़ देता है ।

महत्त्व

- श्रमण परंपरा एक विश्वास या आदत है जो एक समूह या समुदाय के भीतर पीढ़ियों से चली आ रही है और इसका प्रतीकात्मक मूल्य है ।
- अपने अद्वितीय विचारों को बनाने के लिए श्रमण वंश ने स्थापित ब्राह्मण अवधारणाओं को आकर्षित किया ।
- श्रमण परंपरा कई तरह के विचारों का पालन करती है । रूढ़िवादी हिंदू धर्म 3 और हिंदू दर्शन के 6 स्कूलों से बहुत भिन्न है ।
- असहमति इस विचार को लेकर है कि हर किसी के पास एक आत्मा है और यह कथन है कि आत्मा जैसी कोई चीज नहीं है ।
- श्रमण परंपरा में शाकाहार से लेकर मांस की खपत तक और पारंपरिक जीवन से लेकर अत्यधिक तपस्या तक सभी सांसारिक सुखों को त्यागने वाले विचारों की एक विस्तृत स्पेक्ट्रम शामिल है ।
- वैदिक काल के बाद, श्रमण परंपराओं ने तथाकथित हिंदू संश्लेषण को प्रेरित किया जो पूरे दक्षिण भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के कुछ हिस्सों में फैल गया ।
- योग, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और अन्य हिंदू स्कूल श्रमण परंपराओं से विकसित हुए ।
- सभी प्रमुख भारतीय धर्मों जैसे कि सस्त्रा या जन्म-मृत्यु चक्र और मोक्ष, या इससे मुक्ति में आम मान्यताओं को भी जन्म दिया ।
- छठी शताब्दी ई.पू. में जनपद महाजनपद बने।
- मूल कारण-क्षेत्रियता की प्रवृत्ति
- भगवती सूत्र में महाजनपदों का उल्लेख मिलता है ।

1. राजतन्त्रात्मक 14
2. गणतन्त्रात्मक 2 (वज्जी, मल्ल)

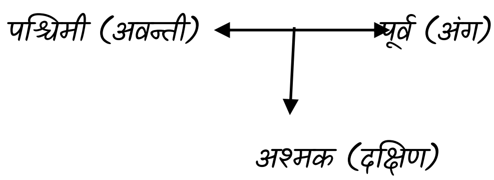

1. अंग

- राजधानी चम्पा
- चम्पा के वास्तुकार महागोविन्द
- बिम्बिसार ने इसे मगध राज्य में मिला लिया था।

2. काशी

- राजधानी वाराणसी
- वाराणसी संगीत कला व वस्त्र उद्योग के लिए प्रसिद्ध था।

3. कोशल

दो राजधानियाँ

- श्रावस्ती (उत्तरी
- कुशावती (दक्षिणी)

INFUSION NOTES
ONLY THE BEST WILL DO

- **बौद्ध धर्म के सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिये गये।**
- बौद्ध धर्म के प्रचार केन्द्र - मगध

बौद्ध संगीतियां

1. 483 ई.पू. संरक्षक शासनकाल में अजातशत्रु के राजगृह में रचना रची गयी ।
   सुत्तपिटक विनयपिटक
   (बुद्ध के उपदेश) (संघ के नियम)
   अध्यक्ष – महाकस्सप
2. 383 ई.पू. संरक्षक - कालाशोक
   वैशाली में - भिक्षुओं में मतभेद
   अध्यक्ष – सर्वकामिनी
3. 250 / 251 ई.पू. संरक्षक शासनकाल में - अशोक
   पाटलिपुत्र में रचना रची गयी
   अभिधम्मपिटक
   (बुद्ध के दार्शनिक विचार)
   अध्यक्ष – मोग्गलिपुत्त तिस्स
4. प्रथम शताब्दी संरक्षक - कनिष्क
   कुण्डलवन में हीनयान व महायान
   (कश्मीर) (सम्प्रदाय में बंटा)
   अध्यक्ष – वसुमित्र

- विहार - बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान
- चैत्य - पूजास्थल

बौद्ध धर्म को अपनाने वाले प्रमुख शासक

- बिम्बिसार - बुद्ध का मित्र
- प्रसेनजीत
- उदायिन
- अशोक – महेन्द्र (पुत्र), संघमित्रा(पुत्री)
- बौद्ध धर्म का प्रचार करने श्रीलंका गये।

नालन्दा विश्वविद्यालय

- **गुप्त शासक कुमारगुप्त ने बौद्ध धर्म की शिक्षा के लिए स्थापित किया।**
- बौद्ध धर्म का अध्ययन करने हेतु आये ।
- फाह्यान, ह्वेनसांग (चीनी यात्री) ।
- अजातशत्रु प्रारम्भ में जैनधर्म का अनुयायी था बाद में बौद्ध धर्म का अनुयायी बना ।

बौद्ध धर्म की प्रमुख महिला अनुयायी

- गौतमी
- नंदा
- मल्लिका
- खेमा
- विशाखा
- यशोधरा
- आम्रपाली
- सुप्रवासा

बौद्ध धर्म के प्रतीक महात्मा बुद्ध के प्रमुख आठ स्थान

- लुम्बिनी
- बोधगया
- सारनाथ
- कुशीनगर
- वैशाली
- राजगृह
- श्रावस्ती
- संकाश्य

बौद्ध संगीति

क्रम-	समय	स्थान	अध्यक्ष	तत्कालीन शासक	कार्य/निर्णय/विशेषता
प्रथम संगीति	483 ई.पू.	सप्तपर्णि गुफा	महाकस्सप	अजातशत्रु (हर्यक वंश)	बुद्ध के उपदेशों का सुत्तपिटक तथा विनय-पिटक में अलग-अलग संकलित किया गया
		(राजगृह)			सुत्तपिटक (धार्मिक संभाषण और बुद्ध के संवादों का संकलन) तथा विनयपिटक (संघ जीवन में भिक्षुओं के नियम) त्रिपिटक (बुद्ध के उपदेशों का संकलन) के अभिन्न अंग हैं।
द्वितीय संगीति	383 ई.पू.	वैशाली	साबकमीर (सुबुकामी)/ सर्वकामिनी	कालाशोक (शिशुनाग वंश)	भिक्षुओं में मतभेद के कारण बौद्धसंघ में विभाजन-(1) स्थविर, (2) महासघिक
तृतीय संगीति	250/251 ई.पू.	पाटलिपुत्र	मोग्गलिपुत्त तिस्स	अशोक (मौर्य वंश)	अभिधम्म पिटक (दार्शनिकसिद्धांत) का संकलन
चतुर्थ संगीति	प्रथम शताब्दी ईस्वी	कुंडलवन (कश्मीर)	वसुमित्र (अध्यक्ष) अश्वघोष (उपाध्यक्ष)	कनिष्क (कुषाण वंश)	बौद्ध धर्म का विभाजन-(1) हीनयान, (2) महायान

जैन धर्म

- जैन शब्द का निर्माण **जिन** से हुआ है जिसका अर्थ होता है – **विजेता**
- **संस्थापक – ऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर**
  कुल 24 तीर्थंकर हुए
- **23वें- पार्श्वनाथ थे ।** पार्श्वनाथ काशी के राजा अश्वसेन के पुत्र थे । पार्श्वनाथ के प्रथम अनुयायी उनकी माता वामा तथा पत्नी प्रभावती थी ।
- जैन धर्म को व्यवस्थित रूप दिया।
- इनके **अनुयायी निर्गन्थ** कहलाये।
- **24वें-तीर्थंकर वर्धमान महावीर** थे ।
- जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक महावीर स्वामी ।
- जन्म 540 ई.पू. कुण्डग्राम में ।
- बचपन का नाम वर्धमान
- पिता- सिद्धार्थ
- माता – त्रिशला
- पत्नी – यशोदा
- पुत्री – प्रियदर्शना (अणोज्जा)
- दामाद – जमालि
- गृहत्याग 30 वर्ष की आयु में
- ज्ञान प्राप्ति 42 वर्ष की आयु में **ज्रम्भिक ग्राम** में ऋजुपालिका नदी के किनारे साल वृक्ष के नीचे उन्हें **कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई ।**
- उपदेश- अर्द्ध-मागधी भाषा में
- प्रथम उपदेश राजगृह में
- प्रथम शिष्य- जमालि
- चम्पा नरेश दधिवाहन की पुत्री चन्दना प्रथम भिक्षुणी थी ।
- महावीर स्वामी की मृत्यु 468 ई.पू. पावापुरी बिहार में
- महावीर शिक्षा प्राकृत भाषा में देते थे ।

जैन धर्म के पंच महाव्रत

1. सत्य वचन
2. अस्तेय (चोरी मत करो)
3. अंहिसा
4. अपरिग्रह (धन संचय मत करो)
5. ब्रह्मचर्य

त्रिरत्न (मोक्ष प्राप्ति के साधन)

- **सम्यक ज्ञान**
- **सम्य दर्शन**
- **सम्यक चरित्र**
- जैनधर्म में पुनर्जन्म में विश्वास तथा कर्मवाद में विश्वास पर बल

संघ

- महावीर ने एक संघ की स्थापना की ।
- इस संघ के **11 अनुयायी** बने जो **गणधर** कहलाये।
- 11 में से 10 महावीर की मृत्यु होने से पहले मोक्ष प्राप्त कर चुके थे।
  एक ही जीवित था - सुधर्मण

जैन संगीतियां (सभायें)

प्रथम- 300 ई.पू.

- पाटलिपुत्र में
- चन्द्रगुप्त मौर्य (संरक्षक)
- अध्यक्ष – स्थूलभद्र
- जैन धर्म दो भागों में विभाजित
- **श्वेताम्बर** - सफेद कपड़े वाले
- **दिगम्बर** - नग्न रहने वाले
- 12 अंगों का संकलन किया गया था ।

द्वितीय - 512 ई.पू. /513/526 ई.पू.

- वल्लभी में
- क्षमाश्रवण (संरक्षक)
- जैन ग्रन्थों का अन्तिम रूप से संकलन
- मुख्य बिंदु कुल 11 अंगों को लिपिबद्ध किया गया ।

- **जैन धर्म का सबसे बड़ा केन्द्र चम्पानगरी**
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने कर्नाटक में जैन धर्म का विस्तार किया।
- **चन्दना प्रथम जैन महिला भिक्षुणी**
- हाथी गुम्फा अभिलेख (खारवेल)
  प्रारम्भिक जैन अवशेष

प्रश्न - निम्न में से कौन-कौन से सिद्धांत जैन धर्म से संबंधित है ?

A. अनेकांतवाद **B. सर्वास्तिवाद**
C. शून्यवाद **D. स्यादवाद**

नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए।

A. 1 व 4 **B. 2, 4**
C. 1, 2 व 3 **D. 2 व 3**
उत्तर – A

प्रमुख जैन तीर्थंकर एवं उनके प्रतीक चिह्न
((Prominent Jain Tirthankaras and their Icons)

जैन तीर्थंकरों के नाम	क्रम	प्रतीक चिह्न
ऋषभदेव (आदिनाथ)	प्रथम	-साँड (वृषभ)
अजित नाथ	द्वितीय	हाथी
सभवनाथ	तृतीय	घोड़ा (अश्व)
सुपार्श्वनाथ	सप्तम	स्वस्तिक
शांतिनाथ	सोलहवें	हिरण
मल्लिनाथ	उन्नीसवें	जल कलश
नेमिनाथ	इक्कीसवें	नीलकमल
अरिष्टनेमि	बाईसवें	शंख
पार्श्वनाथ	तेईसवें	सर्प
महावीर	चौबीसवें	सिंह

प्रश्न-3. वह सील जिस पर एक योगी की आकृति बनी हुई है, जो पशुपति शिव जैसी दिखाई देती है मिली है?
A. मोहनजोदड़ो B. हड़प्पा
C. लोथल D. कालीबंगा
उत्तर – A

प्रश्न-4. सर्वप्रथम मानव ने निम्न किस धातु का उपयोग किया?
A. सोना B. चाँदी
C. तांबा D. लोहा
उत्तर – C

प्रश्न-5. किस हड़प्पा स्थल से एक साथ दो फसलें उगाई जाने के साक्ष्य मिलते हैं?
A. हड़प्पा B. रोपड़
C. बणावली D. कालीबंगा
उत्तर - D

प्रश्न-6. 'यज्ञ' संबंधी विधि विधानों का पता चलता है?
A. ऋग्वेद से B. सामवेद से
C. ब्राह्मण ग्रंथों से D. यजुर्वेद से
उत्तर – D

प्रश्न-7. प्रजापति की पुत्रियों के नाम है?
A. ऊषा व अदिति B. सभा व समिति
C. घोषा व अपाला D. उमा व सरस्वती
उत्तर – B

प्रश्न-8. ऋग्वेद में आर्य शब्द किसका वाचक है?
A. जाति B. धर्म
C. व्यवसाय D. गुण
उत्तर – D

प्रश्न-9. चारों आश्रमों का उल्लेख किस उपनिषद् में हुआ है?
A. मुण्डकोपनिषद् B. छान्दोग्योपनिषद्
C. वृहदारण्यकोपनिषद् D. जाबालोपनिषद्
उत्तर – D

प्रश्न-10. 16 महाजनपदों की सूची किस बौद्ध ग्रंथ में मिलती है?
A. त्रिपिटक B. अंगुत्तर निकाय
C. ललित विस्तार D. दीप वंश
उत्तर – B

प्रश्न-11. निम्नलिखित में से कौन - सा सिद्धांत जैन धर्म से संबंधित नहीं है?
A. स्यादवाद B. अनेकांतवाद
C. सर्वास्तिवाद D. पंचमहाव्रत
उत्तर – C

प्रश्न-12. योगाचार्य दर्शन संप्रदाय संबंधित है?
A. सांख्य योग से B. शंकर वेदांत से
C. हीनयान से D. महायान से
उत्तर - D

अध्याय – 2

प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की उपलब्धियाँ

मौर्य वंश

राजनीतिक इतिहास

- शासन काल चतुर्थ शताब्दी ई.पू. से द्वितीय शताब्दी ई.पू. तक (321-185 ई.पू.)
- स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) के सहयोग से (मगध में)
- मौर्य शासन से पहले मगध पर नंद वंश के शासक धनानन्द का शासन था।
- मौर्य राजवंश ने लगभग 137 वर्ष तक भारत में राज किया।
- राजधानी पाटलिपुत्र (पटना)

आचार्य चाणक्य

- जन्म तक्षशिला में (आचार्य)
- अन्य नाम विष्णुगुप्त, कौटिल्य
- चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री तथा प्रधान पुरोहित आचार्य चाणक्य थे।
- **पुराणों में चाणक्य को "द्विजर्षभ" कहा गया है जिसका मतलब है श्रेष्ठ ब्राह्मण**
- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के बाद भी बिन्दुसार के समय भी चाणक्य प्रधानमंत्री बना रहा (कुछ समय के लिए)
- चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय में आचार्य रहे थे।
- इन्होंने **अर्थशास्त्र नामक पुस्तक** की रचना की।
- अर्थशास्त्र मौर्यकालीन साम्राज्य की राजव्यवस्था एवं शासन प्रणाली पर प्रकाश डालता है।
- अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण तथा 180 प्रकरण हैं।

चन्द्रगुप्त मौर्य (321 – 298 ई.पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य 321 ई.पू. धनानन्द को हरा कर मगध का शासक बना।
- इसने सिकन्दर के उत्तराधिकारी सेल्यूकस को भी हराया था।
- सेल्यूकस की पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ हुआ।
- **उपाधियाँ** - पाटलिपुत्रक (पालिब्रोथस)
- भारत का मुक्तिदाता
- प्रथम भारतीय साम्राज्य का संस्थापक

प्रमुख तथ्य : चन्द्रगुप्त मौर्य

- बैक्ट्रिया के शासक सेल्यूकस को चन्द्रगुप्त ने पराजित कर उसकी पुत्री से विवाह किया तथा **दहेज में हेरात, कंधार, मकरान तथा काबुल प्राप्त किया।**
- सेल्यूकस ने अपने राजदूत मेगस्थनीज को चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा था। यूनानी लेखकों ने **पाटलिपुत्र को पालिब्रोथा के नाम से संबोधित** किया है।
- **'चन्द्रगुप्त' नाम का प्राचीनतम उल्लेख रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख** में प्राप्त हुआ है।

- प्रारंभिक चोल मंदिर साधारण योजना की कृतियाँ हैं लेकिन साम्राज्य की शक्ति और साधनों की वृद्धि के साथ मंदिरों के आकार और प्रभाव में भी परिवर्तन हुआ ।
- इन मंदिरों में सबसे अधिक प्रसिद्ध और प्रभावोत्पादक राजराज प्रथम द्वारा तंजौर में निर्मित राजराजेश्वर मंदिर, राजेंद्र प्रथम द्वारा गंगैकोंडचोलपुरम् में निर्मित गंगैकोंडचोलेश्वर मंदिर है ।
- चोल युग अपनी कांस्य प्रतिमाओं की सुंदरता के लिए भी प्रसिद्ध है। इनमें नटराज की मूर्तियाँ सर्वाकृष्ट हैं।
- इसके अतिरिक्त शिव के दूसरे कई रूप, ब्रह्मा, सप्तमातृका, लक्ष्मी तथा भूदेवी के साथ विष्णु, अपने अनुचरों के साथ राम और सीता, शैव सन्त और कालियदमन करते हुए कृष्ण की मूर्तियाँ भी उल्लेखनीय हैं।

ग्रामीण या स्थानीय स्वायतत्ता

- चोलकालीन प्रशासन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता ग्रामीण स्तर पर स्थानीय शासन या स्वायतत्ता की व्यवस्था थी।
- चोलकालीन अभिलेखों की प्रचुरता के कारण हमें इस साम्राज्य के ग्राम प्रशासन की अधिक जानकारी प्राप्त है।
- इसके लिए विभिन्न गाँवो में स्थानीय प्रशासन का काम प्रतिनिधि संस्थाओं के माध्यम से संचालित होता था। **अभिलेखों में दो सभाओं का उल्लेख मिलता है - उर, सभा या महासभा।** उर गाँव की आम सभा थी।
- किसी भी गाँव के वयस्क, पुरुष करदाताओं के द्वारा उर या ग्राम या मेलग्राम का संचालन होता था। सभा या महासभा, अग्रहार कहे जाने वाले ब्राह्मणों व गाँवों के वयस्क सदस्यों की सभा थी।
- अग्रहार गाँवों में ब्राह्मण लोग निवास करते थे और वहां की अधिकांश भूमि लगान मुक्त होती थी

महत्वपूर्ण राज्यों के संस्थापक एवं उनकी राजधानियाँ

राज्य	राजधानियाँ	संस्थापक
चोल	तंजौर	विजयालय
कलचुरी वंश	त्रिपुरी	कोकल्ल
प्रतिहार	उज्जैन, कन्नौज	हरिश्चंद्र
राष्ट्रकूट	मान्यखेत	दंतिदुर्ग
परमार	उज्जैन, धारा	उपेन्द्र या कृष्णराज
गहड़वाल	कन्नौज	चंद्रदेव
कल्याणी के चालुक्य	मान्यखेत	विजयादित्य
सेन राजवंश	काशीपुर, लखनौती	सांमतसेन
पल्लव	काँचीपुरम	सिंहविष्णु
उत्पल	कश्मीर	अवन्ति वर्मन
मालवा के परमार	उज्जैन	सीयक या श्रीहर्ष

राज्य	**राजधानियाँ**	**संस्थापक**
चालुक्य (वेंगी)	वेंगी	विष्णुवर्धन
चालुक्य वातापी	वातापी (वललभी)	जयसिंह प्रथम
पाल	मुंगेर	गोपाल
वाकाटक	नदीवर्धन	विंध्यशक्ति
चंदेल	खुजराहो	नन्नुक
सोलंकी वंश	अन्हिलवाड़	मूलराज प्रथम
चौहान	अजमेर	वासुदेव
शाही वंश	उद्‌भाण्ड	कललर
लोहर वंश	कश्मीर	संग्राम राज
कार्कोट वंश	कश्मीर	दुलर्भवर्धन
जेजाकभुक्ति के चंदेल	खुजराहो	नन्नुक

सामंत प्रथा का अर्थ और उत्पत्ति

- सामंती प्रथा का विकास गुप्तोत्तर काल, विशेष रूप से 800 ई. से 1200 ई. के बीच हुआ। इस काल में यह वर्ग शक्तिशाली हो गया।
- वस्तुतः इनकी उत्पत्ति सातवाहनों और उसके बाद भूमिदान की प्रथा आरंभ होने के साथ ही हो चुकी थी तथा ब्राह्मणों के जीविकोपार्जन के लिए उन्हें कर मुक्त भूमि दी जाने लगी थी लेकिन ब्राह्मणों को भूमि से मात्र कर वसूलने का ही अधिकार था।
- प्रशासन करने का नहीं।
- सही मायने में भारत में इस समय राजस्व वसूलने के साथ-साथ संबंधित क्षेत्र की शासन व्यवस्था संभालने का उत्तरदायित्व भी सामंत को दे दिया गया।
- सामंती व्यवस्था की नींव हर्ष के शासनकाल में पड़ी। इसके बावजूद भारत में यूरोप की तरह पूर्ण विकसित सामंती व्यवस्था की स्थिति कभी नहीं उत्पन्न हो सकी।
- सातवीं शताब्दी अर्थात् हर्ष काल से सरकारी अधिकारियों को नगद वेतन के स्थान पर दिये जाने वाले भूमि अनुदान ने सामंती प्रक्रिया को बल प्रदान किया। ऐसी भूमि प्राप्त करने वाला पदाधिकारी सामंत कहा गया।
- दूसरे प्रकार के सामंतो में पराजित राजा और उनके समर्थक तथा स्थानीय सरदार भी थे जो सीमित क्षेत्रों से राजस्व प्राप्त करते थे।
- सामंतो के साथ दो बातें जुड़ी थी - एक तो राजस्व के समस्त साधन उन्हें हस्तातंरित कर दिये जाते थे तथा दूसरे

- संरचनात्मक मंदिरों के अलावा एक अन्य प्रकार के मंदिर थे जो **चट्टानों को काटकर** बनाए गए थे। इनमें प्रमुख हैं **महाबलिपुरम का रथ-मंडप जो 5वीं शताब्दी का है।**
- गुप्तकालीन मंदिर आकार में बेहद छोटे हैं । एक वर्गाकार चबूतरा (ईंट का) है जिस पर चढ़ने के लिये सीढ़ी है तथा बीच में चौकोर कोठरी है जो गर्भगृह का काम करती है।
- कोठरी की छत भी सपाट है व अलग से कोई प्रदक्षिणा पथ भी नहीं है।
- इस प्रारंभिक दौर के निम्नलिखित मंदिर हैं जो कि भारत के प्राचीनतम संरचनात्मक मंदिर हैं: तिगवा का विष्णु मंदिर (जबलपुर, मध्यप्रदेश), भूमरा का शिव मंदिर (सतना, मध्यप्रदेश), नचना कुठार का पार्वती मंदिर (पन्ना, मध्यप्रदेश), देवगढ़ का दशावतार मंदिर (ललितपुर, उत्तरप्रदेश), भीतरगाँव का मंदिर (कानपुर, उत्तरप्रदेश) आदि।
- मंदिर स्थापत्य संबंधी अन्य नाम, जैसे- पंचायतन, भूमि, विमान भद्ररथ, कर्णरथ और प्रतिरथ आदि भी प्राचीन ग्रन्थों में मिलते हैं।
- छठी शताब्दी ईस्वी तक उत्तर और दक्षिण भारत में मंदिर वास्तुकला शैली लगभग एकसमान थी, लेकिन छठी शताब्दी ई. के बाद प्रत्येक क्षेत्र का भिन्न-भिन्न दिशाओं में विकास हुआ
- आगे ब्राह्मण हिन्दू धर्म के मंदिरों के निर्माण में तीन प्रकार की शैलियों नागर, द्रविड़ और बेसर शैली का प्रयोग किया गया।

मंदिर स्थापत्य

नागर	द्रविड़	बेसर
पाल उपशैली	पल्लव उपशैली	राष्ट्रकूट
ओडिशा उपशैली	चोल उपशैली	चालुक्य
खजुराहो उपशैली	पाण्डय उपशैली	काकतीय
सोलंकी उपशैली	विजयनगर उपशैली	होयसल
	नायक उपशैली	

क्रम	मंदिर	स्थल	कालखण्ड
1	गोलाकार ईंट व इमारती लकड़ी का मंदिर	बैराट ज़िला राजस्थान	तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व
2	साँची का मंदिर- 40	साँची (मध्य प्रदेश)	तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व
3	साँची का मंदिर-18	साँची (मध्य प्रदेश)	द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व
4	प्राचीनतम संरचनात्मक मंदिर	ऐहोल (कर्नाटक)	चौथी शताब्दी ईसा पूर्व
5	साँची का मंदिर-17	साँची (मध्य प्रदेश)	चौथी सदी
6	लड़खन मंदिर	ऐहोल (कर्नाटक)	पाँचवीं सदी ईस्वी सन्
7	दुर्गा मंदिर	ऐहोल (कर्नाटक)	550 ईस्वी सन्

प्रश्न - निम्नलिखित सूर्य मंदिरों में कौनसा पाटन, गुजरात में स्थित है?

A. कोणार्क **B. मोढ़ेरा**
C. मार्तण्ड **D. दक्षिणार्क**

उत्तर - B

भारतीय मंदिरों के स्थापत्य की नागर, द्रविड़ और बेसर शैलियाँ

पूर्व मध्यकालीन शिल्पशास्त्रों में मंदिर स्थापत्य की तीन बड़ी शैलियाँ बताई गई हैं – नागर शैली, द्रविड़ शैली और बेसर शैली।

नागर शैली – नागर शैली का प्रचलन **हिमालय और विन्ध्य पहाड़ों के बीच** की धरती में पाया जाता है।

द्रविड़ शैली – द्रविड़ शैली **कृष्णा और कावेरी नदियों के बीच** की भूमि में अपनाई गई।

बेसर शैली – बेसर शैली **विन्ध्य पहाड़ों और कृष्णा नदी के बीच** के प्रदेश से सम्बन्ध रखती है।

नागर शैली

इस शैली के सबसे पुराने उदाहरण **गुप्तकालीन मंदिरों में,** विशेषकर, देवगढ़ के दशावतार मंदिर और भीतरगाँव के ईंट-निर्मित मंदिर में मिलते हैं।

नागर शैली की दो बड़ी विशेषताएँ हैं – इसकी **विशिष्ट योजना और विमान।**

I. इसकी मुख्य भूमि आयताकार होती है जिसमें बीच के दोनों ओर क्रमिक विमान होते हैं जिनके चलते इसका पूर्ण आकार तिकोना हो जाता है। यदि **दोनों पार्श्वों में एक-एक विमान होता है तो वह त्रिरथ** कहलाता है। दो-दो विमानों वाले मध्य भाग को **सप्तरथ** और चार-चार विमानों वाले भाग को **नवरथ** कहते हैं। ये विमान मध्य भाग्य से लेकर के मंदिर के अंतिम ऊँचाई तक बनाए जाते हैं।

II. मंदिर के सबसे ऊपर शिखर होता है।

III. नागर मंदिर के शिखर को रेखा शिखर भी कहते हैं।

IV. नागर शैली के मंदिर में दो भवन होते हैं – एक गर्भगृह और दूसरा मंडप। **गर्भगृह ऊँचा** होता है और **मंडप छोटा** होता है।

V. गर्भगृह के ऊपर एक घंटाकार संरचना होती है जिससे मंदिर की ऊँचाई बढ़ जाती है।

VI. नागर शैली के मंदिरों में चार कक्ष होते हैं – गर्भगृह, जगमोहन, नाट्यमंदिर और भोगमंदिर।

VII. प्रारम्भिक नागर शैली के मंदिरों में स्तम्भ नहीं होते थे।

VIII. 8वीं शताब्दी आते-आते नागर शैली में अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग नए लक्षण भी प्रकट हुए। बनावट में कहीं-कहीं विविधता आई। जैसा कि हम जानते हैं कि इस शैली का विस्तार उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में बीजापुर तक और पश्चिम में पंजाब से लेकर पूरब में बंगाल तक था। इसलिए स्थानीय विविधता का आना अनपेक्षित नहीं था, फिर भी तिकोनी आधार भूमि और नीचे से ऊपर घटता हुआ शिखर का आकार सर्वत्र एक जैसा रहा।

IX. **भुवनेश्वर में स्थित लिंगराज मंदिर** इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

द्रविड़ शैली

द्रविड़ स्थापत्य शैली का सम्बन्ध दक्षिण और दक्कन के मंदिरों से है। पर कुछ पुराने नमूने उत्तर भारत और मध्य भारत में भी पाए गए हैं, जैसे – लाड़खान का पार्वती मंदिर तथा ऐहोल के कोन्ठगुडि और मेगुती मंदिर।

I. द्रविड़ शैली की प्रमुख विशेषता इसका **पिरामिडीय विमान है।** इस विमान में मंजिल पर मंजिल होते हैं जो बड़े से ऊपर की ओर छोटे होते चले जाते हैं और अंत में गुम्बदाकार आकृति होती है जिसका तकनीकी नाम **स्तूपी अथवा स्तूपिका** होता है।

II. समय के साथ द्रविड़ मंदिरों में विमानों के ऊपर मूर्तियों आदि की संख्या बढ़ती चली गयी।

III. द्रविड़ मंदिर में एक आयताकार गर्भगृह होता है जिसके चारों ओर प्रदक्षिणा का मार्ग होता है।

IV. द्रविड़ मंदिरों में समय के साथ कई विशेषताएँ जुड़ती चली गईं, जैसे – स्तम्भ पर खड़े बड़े कक्ष एवं गलियारे तथा विशालकाय गोपुर (द्वार)।

V. द्रविड़ शैली के दो सबसे प्रमुख लक्षण है :- i) इस शैली में मुख्य मंदिर के चार से अधिक पार्श्व होते हैं ii) मंदिर का शिखर और विमान पिरामिडीय आकृति के होते हैं।

VI. **द्रविडीय स्थापत्य में स्तम्भ और प्लास्टर का प्रचुर प्रयोग होता है।** यदि इस शैली में कोई शिव मंदिर है तो उसके लिए अलग से नंदी मंडप भी होता है। इसी प्रकार ऐसे विष्णु मंदिरों में एक गरुड़ मंडप भी होता है।

VII. उत्तर भारतीय मंदिरों के विपरीत दक्षिण भारतीय मंदिरों में चारदिवारी भी होती है।

VIII. **कांची में स्थित कैलासनाथ मंदिर द्रविड़** स्थापत्य का एक प्रमुख उदाहरण है। यह मंदिर राजसिंह और उसके बेटे महेंद्र III द्वारा बनाया गया है।

वेसर शैली

I. इस स्थापत्य शैली का प्रादुर्भाव पूर्व मध्यकाल में हुआ।

II. वस्तुतः यह एक **मिश्रित शैली है** जिसमें नागर और द्रविड़ दोनों शैलियों के लक्षण पाए जाते हैं।

III. वेसर शैली के उदाहरणों में दक्कन भाग में कल्याणी के परवर्ती चालुक्यों द्वारा तथा होयसालों के द्वारा बनाए गए मंदिर प्रमुख हैं।

IV. इसमें द्रविड़ शैली के अनुरूप विमान होते हैं पर ये विमान एक-दूसरे से द्रविड़ शैली की तुलना में कम दूरी पर होते हैं जिसके फलस्वरूप मंदिर की ऊँचाई कुछ कम रहती है।

V. वेसर शैली में बौद्ध चैत्यों के समान अर्धचंद्राकार संरचना भी देखी जाती है, जैसे – ऐहोल के दुर्गामंदिर में।

VI. मध्य भारत और दक्कन में स्थान-स्थान पर वेसर शैली में कुछ अंतर भी पाए जाते हैं। उदाहरणस्वरूप, पापनाथ मंदिर और पट्टड़कल मंदिर।

खजुराहो मंदिर : नागर शैली के हिन्दू व जैन मंदिर

- मध्य प्रदेश में स्थित खजुराहो के मंदिरों का निर्माण चंदेल वंश के शासकों द्वारा 900 से 1130 ई। के मध्य किया गया था । ये **मंदिर अपनी नागर स्थापत्य शैली और कामुक मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध हैं।** यहाँ के मंदिर हिन्दू व जैन धर्म से संबन्धित हैं और यहाँ का सबसे प्रसिद्ध मंदिर 'कंदारिया महादेव मंदिर' है । **खजुराहो के मंदिरों को 1986 ई। में युनेस्को ने 'विश्व विरासत स्थल' का दर्जा प्रदान किया था।**
- खजुराहो के मंदिर भारतीय स्थापत्य कला के अद्भुत उदाहरण हैं, जिनका निर्माण तत्कालीन चंदेल वंश के शासकों ने किया था। इन मंदिरों को 'विश्व विरासत स्थल' का दर्जा प्रदान किया जाना इनके कलात्मक महत्व को दर्शाता है।

खजुराहो मंदिर से संबन्धित तथ्य :

1) खजुराहो हिन्दू व जैन मंदिरों का समूह है, जो मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित है।
2) चौंसठ योगिनी मंदिर, ब्रह्मा एवं महादेव मंदिर ग्रेनाइट पत्थसर से और शेष मंदिर गुलाबी अथवा हल्के पीले रंग के दानेदार बलुआ पत्थमर से बने हैं।
3) खजुराहो मंदिर मध्य भारत की विंध्य पर्वतश्रेणी में अवस्थित है।
4) खजुराहो के मंदिरों का निर्माण चंदेल वंश के शासकों द्वारा 900 से 1130 ई। के मध्य किया गया था।
5) इन मंदिरों को 1986 ई। में युनेस्को ने 'विश्व विरासत स्थल' का दर्जा प्रदान किया था।
6) खजुराहो के मंदिरों का निर्माण **ग्रेनाइट की नींव,** जोकि दिखाई नहीं देती है, पर **बलुआ पत्थर** से किया गया है।
7) ये मंदिर अपनी नागर स्थापत्य शैली और कामुक मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध हैं।
8) खजुराहो मंदिरों का संबंध वैष्णव धर्म, शैव धर्म और जैन धर्म से है।

- ***स्मृतियाँ हिंदू धर्म के कानूनी ग्रन्थ हैं। ये अधिकांशतः पद्य में लिखी गई हैं-***

प्रमुख स्मृतियाँ	रचना काल
मनुस्मृति	200 ई. पू. से 200 ई.
याज्ञवल्क्य स्मृति	100 ई. पू. से 300 ई.
नारद स्मृति	300 ई. पू. से 400 ई.
पाराशर स्मृति	300 ई. पू. से 500 ई.
बृहस्पति स्मृति	300 ई. पू. से 500 ई.
कात्यायन स्मृति	400 ई. पू. से 600 ई.
देवल स्मृति	पूर्व मध्यकालीन

महाकाव्य पुराण एवं शास्त्रीय

- ***संस्कृत साहित्य***

- संस्कृत जो कई यूरोपीय भाषाओं के सबसे करीब है, बोली जाने वाली प्राचीन भारतीय भाषा की तस्वीर विकसित करने में सबसे पहले आती है ।
- संस्कृत भारत में बोली जाने वाली पहली भाषा थी आर्यन पारंपरिक संस्कृत के करीब सरल भाषा में बात करते थे ।
- व्याकरणशास्त्री पाणिनि (चौथी शताब्दी ईसा पूर्व) के समय संस्कृत भाषा ने अपना शास्त्रीय रूप प्राप्त किया ।
- पाणिनि के समय से भाषा को संस्कार के रूप में जाना जाता था, जिसका अर्थ है "पूर्ण या परिष्कृत" ।
- उज्जैन के शक संस्कृत का उपयोग करने वाले पहले प्रमुख राजवंश थे । रुद्रादमन का गिरनार शिलालेख संस्कृत साहित्य का सबसे पुराना जीवित उदाहरण है ।
- महाकाव्य साहित्य के तौर पर वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण तथा वेदव्यास द्वारा रचित महाभारत की गणना सर्वप्रमुख रूप से होती है।
- **महाभारत एक स्वच्छंद कृति है जिसमें चार-चार पंक्तियों के एक लाख श्लोक हैं। रामायण का आकार इससे लगभग एक-चौथाई ही है।**
- भगवद् गीता महाभारत का दार्शनिक विस्तार है जिसमें कर्म की प्रधानता तथा आत्मा की अमरता पर विशेष व्याख्यान दिया गया है।
- पुराण का शाब्दिक अर्थ है प्राचीन आख्यान, इसके संकलनकर्त्ता महर्षि लोमहर्ष अथवा उनके पुत्र उग्रश्रवा माने जाते हैं।
- **पुराणों की संख्या 18 मानी जाती है।** इनमें वायु पुराण, मत्स्य पुराण, विष्णु पुराण, भागवत पुराण, मार्कण्डेय पुराण आदि प्रमुख हैं। **इनमें मत्स्य पुराण (अथवा वायु पुराण) सबसे प्राचीन है।**
- पुराण अपने वर्तमान रूप में संभवतः ईसा की तीसरी और चौथी शताब्दी में लिखे गए।
- महाकाव्य के क्षेत्र में महानतम विभूति कालिदास (380 ई. सन् से 415 ई. सन् तक) थे। इन्होंने अपनी रचना हेतु मूल विषयवस्तु महाभारत तथा रामायण से ग्रहण किया।
- कालिदास ने कई नाटकों की रचना की जिनमें कुमारसंभवम्, रघुवंशम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम आदि प्रमुख हैं।
- अन्य विशिष्ट कवियों यथा **भारवि (550 ई. सन्) ने 'किरातार्जुनीयम्' की रचना की।** श्री हर्ष और भट्टी जैसे अनेक कवि हैं जिन्होंने उत्तम रचनाएँ कीं।
- कालिदास से पूर्व ही अश्वघोष जैसे बौद्ध विद्वान ने 'बुद्ध चरित' तथा 'सौन्दरानंद' जैसे काव्य की रचना की।
- भारवि और माघ जैसे कवियों ने काव्य की मुख्य विषयवस्तु भी महाभारत से ही ग्रहण की, परंतु दोनों में अंतर यह था कि **भारवि ने अपने काव्य में जहाँ शिव को आराध्य बनाया वहीं माघ ने विष्णु को।**
- **भारवि ने 'किरातार्जुनीयम्' तथा माघ ने शिशुपाल वध नामक महाकाव्य की रचना की।**
- आगे की रचनाओं में भटेनारायण की वेणीसंहार तथा परवर्ती कश्मीरी लेखक कल्हण की 'राजतरंगिणी' विशेष रूप से उल्लेखनीय है।
- ***12वीं शताब्दी में रचित 'राजतरंगिणी' एक इतिहास परक ग्रन्थ है, जिसमें मौर्यकाल से लेकर 1148 ई. तक के कश्मीर के इतिहास की विश्वसनीय जानकारी मिलती है।***

प्रश्न - संस्कृत की निम्नलिखित में से कौनसी रचनाओं ने महाभारत से अपना कथासूत्र लिया है ? (RAS-2016)

(i) नैषधीयचरित (ii) किरातार्जुनीयम
(iii) शिशुपालवध (iv) दशकुमारचरित
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए -
(A) (i) और (iii)
(B) (ii) और (iii)
(C) (i), (iii) और (iii)
(D) (i), (ii), (iii) और (iv) **उत्तर - (c)**

- विल्हण ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'विक्रमांकदेवचरित' में तथा जयदेव ने अपनी रचना 'गीत गोविन्द' में गीतात्मक शैली का प्रयोग किया है।
- गद्य उपन्यास को संस्कृत भाषा में लोकप्रिय बनाने में दंडी, सुबन्धु तथा बाणभट्ट का नाम प्रमुख है।
- उत्तरकालीन गद्य उपन्यासों में माधवानल, कामकंदला तथा तिलकमंजरी का नाम प्रमुख है, जिसमें सरल संस्कृत गद्य के बीच-बीच में प्राकृत और संस्कृत के पद्य भी समाहित किये गए हैं।

वेद	ब्राह्मण	उपनिषद्	उपवेद
ऋग्वेद	ऐतरेय, कौषीतकि	ऐतरेय, कौषीतकि	आयुर्वेद
यजुर्वेद	शतपथ	कठोपनिषद्, तैत्तिरीयोपनिषद्, श्वेताश्वतरोपनिषद्, मैत्रायणी उपनिषद्, ईशावास्योपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्	धनुर्वेद
सामवेद	ताण्ड्य जैमिनीय	छांदोग्य, जैमिनीय**वेद**	गंधर्ववेद
अथर्ववेद	गोपथ	मुंडकोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद्, मांडुक्योपनिषद्	ब्रह्मवेद, शिल्पवेद

प्रश्न - निम्न में से किन ग्रंथों में प्राचीन भारत के सोलह महाजनपदों (षोडश महाजनपद) की सूची मिलती है ? (RAS-2016)
(i) अर्थशास्त्र
(ii) अंगुत्तर निकाय
(iii) दीर्घ निकाय
(iv) भगवती सूत्र
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए -
कूट :-
(A) (i) और (ii)
(B) (ii) और (iv)
(C) (i), (ii) और (iii)
(D) (ii), (iii) और (iv)
उत्तर – B

नाट्य ग्रन्थ

- **भरतमुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व का माना जाता है जो संस्कृत नाट्यशास्त्र का सबसे पुराना तथा प्रमाणिक ग्रन्थ है।**
- **नाट्यशास्त्र को पंचमवेद भी कहा जाता है।**
- कालिदास, अश्वघोष, भास, शूद्रक, भवभूति, भटेनारायण, मुरारी तथा राजशेखर आदि प्रमुख नाटककार हैं।
- शूद्रक द्वारा रचित 'मृच्छकटिकम्' (चिकनी मिट्टी का ठेला) एक असाधारण नाटक है जिसमें निष्ठुर सत्यता के पुट देखने को मिलते हैं।

प्राचीन भारत की प्रमुख पुस्तकें

कृति	कृतिकार
महाभाष्य	पतंजलि
मुद्राराक्षस	विशाखदत्त
मालविकाग्निमित्रम्	कालिदास
अर्थशास्त्र	कौटिल्य
नीतिसार	कामंदक
काव्यालंकार	भामह
सांख्यकारिका	ईश्वरकृष्ण
पदार्थ धर्मसंग्रह	आचार्य प्रशस्तपाद
प्राकृत पैंगलम	आचार्य हेमचंद्र
पृथ्वीराज विजय	जयानक
ब्रह्म सिद्धांत	ब्रह्मगुप्त
आर्यभट्टीयम्, दशगीतिका सूत्र तथा आर्याष्टशत	आर्यभट्ट
भुवनकोश, कर्पूरमंजरी काव्यमीमांसा, विद्धशाल-भंजिका, वाल्मीकि रामायण	राजशेखर
हितोपदेश	नारायण पंडित
कामसूत्र	वात्स्यायन
शिशुपाल वध	माघ

प्रश्न-7. कर्नाटक युद्धों में अंग्रेजों द्वारा किसे पराजित किया गया?

A. फ्रांसीसियों को B. पुर्तगालियों को

C. डचों एवं पुर्तगालियों को D. डचों को

उत्तर - A

प्रश्न-8. बंगाल का पहला गवर्नर जनरल था?

A. लॉर्ड क्लाइव B. लार्ड वारेन हेस्टिंग

C. लॉर्ड जॉन शोर D. लॉर्ड कार्नवालिस

उत्तर - B

प्रश्न-9. भारत का पहला भारतीय गवर्नर जनरल कौन था?

A. B.R. अम्बेडकर

B. सी. राजगोपालाचारी

C. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

D. डॉ. एस. राधाकृष्णन

उत्तर - B

प्रश्न-10. निम्न में से किसको आधुनिक भारत के निर्माण के रूप में जाना जाता है ?

A. लॉर्ड कार्नवालिस B. विलियम बैंटिक

C. लॉर्ड डलहौजी D. लॉर्ड कर्जन

उत्तर – c

प्रश्न-11. भारत के औपनिवेशिक काल में अधोमुखी निस्यंदन सिद्धान्त किस क्षेत्र से संबन्धित था?

A. रेल B. चिकित्सा

C. शिक्षा D. सिंचाई

उत्तर - C

अध्याय – 3

स्वतंत्रता संघर्ष एवं राष्ट्रीय आंदोलन

राष्ट्रवाद कांग्रेस की विभिन्न विचार धाराएँ विभाजन के उदय के स्थापना व स्वतंत्रता कारण
उदारवादी उग्रवादी क्रांतिकारी गाँधीवादी समाजवादी

राष्ट्रीय आंदोलन के उदय के कारण :

(1) ब्रिटिश राजनीतिक आर्थिक सामाजिक नीतियाँ

- ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियों ने विभिन्न राज्यों को जीतकर उनकी अलग -अलग पहचान समाप्त कर वहाँ एक समान सामाजिक -राजनीतिक संरचना स्थापित की।
- इसी क्रम में भारत का एक गवर्नर जनरल नियुक्त किया गया तो साथ ही, एक समान न्यायिक प्रणाली लागू की गई। इस तरह विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले भारतीय एक सूत्र में बचे।
- वस्तुतः ब्रिटिश आर्थिक नीतियों ने भारत के विभिन्न क्षेत्र के लोगों को एक दूसरे से जोड़ दिया । दरअसल एक साझे एकजुट की उपस्थिति एवं पहचान ने विभिन्न क्षेत्र के भारतीयों को ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ । ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ।
- **ब्रिटिश शासन द्वारा विकसित संचार प्रणाली जैसे-रेलवे सड़क डाकतार व्यवस्थाने विभिन्न क्षेत्र के लोगों के आवागमन को आसान बनाकर आपसी संपर्क को बढ़ावा दिया ।**
- **फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास का आधार निर्मित हुआ। वस्तुतः रेलवे जैसे साधनों के विकास से देश** के विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों एवं लोगों का आपसी संपर्क आसान हुआ । इससे राजनीतिक विचारों के आदान प्रदान की प्रक्रिया को बढ़ावा मिला।
- ब्रिटिश शिक्षा नीति एवं पश्चिमी चिंतन ने भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार किया । फलत :एक भारतीय मध्यवर्ग का उदय हुआ जो ब्रिटिशऔपनिवेशिक नीतियों के स्वरूप को समझ सका और शोषण के विरुद्ध लोगों को जागरूक कर एककिया एवं मध्यवर्ग होकर बैंथम मिल, रूसो, जॉन लॉक, मोटेस्क्यू डार्विन के विचारों से परिचित हुआ और जनतांत्रिक अधिकारों की मांग करने लगा।
- इस तरह आधुनिक शिक्षा प्राप्त मध्यवर्ग ने ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की समीक्षा करके उसके औपनिवेशिक स्वरूप को उजागर कर दिया और शोषण से मुक्ति के लिए विभिन्न संगठनों की स्थापना कर उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया । इसी संदर्भ में यह कहा गया कि "भारतीयों ने पश्चिमी हथौड़े से पश्चिमी बेडियों को तोड़ डाला"।

(2) सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन :-

- 19 वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक सुधार ने वर्ण व्यवस्था, जाति-पाँति, छुआछुत और धार्मिक आडंबरों पर चोट कर

मानव की एकता पर बल दिया तो साथ ही, प्राचीन गौरवपूर्ण परंपरा को उद्घटित कर भारतीयों के अंदर हीनता की भावना को दूर कर आत्मविश्वास और सम्मान की भावना भरी।

- इसी तरह, सुधारकों ने 'स्वराज' एवं 'स्वदेशी' पर बल दिया और विदेशी शासन को किसी भी दृष्टि से सुखदायी नहीं बताया तथा इससे मुक्त होने के लिए लोगों को प्रेरित किया। इसी क्रम में, भारत भारतीयों के लिए नारा दिया गया। फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(3) पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन :-

- पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशन से विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों को उनके विचारों और समस्याओं से अवगत कराया। साथ ही, आधुनिक विचारों जैसे -स्वशासन, लोकतंत्र नागरिक अधिकार आदि को प्रचारित कर लोगों को जागरूक बनाया। इसी क्रम में, राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(4) लिटन और कर्जन की नीतियाँ :-

- लिटन की प्रतिक्रियावादी नीतियों ने भारतीयों को असंतुष्ट किया। लिटन ने देशी समाचार पत्र अधिनियम लाकर समाचार पत्रों की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया । साथ ही, सिविल सेवा परीक्षा में उम्र सीमा में कमी कर भारतीयोंको इससे बाहर करने की योजना बनायी।
- इतना ही नहीं, अकाल के दौरान दिल्ली दरबार का आयोजन कर ब्रिटेन के शासक का सम्मान करने का कार्य किया और भारतीय धन का दुरुपयोग किया और लिख के भारतीय विरोधी नीति से असंतुष्ट होकर लोग एकत्रित हुए।
- **कर्जन ने विश्वविद्यालय अधिनियम लाकर शिक्षण संस्थान की स्वतंत्रताओं पर अंकुश लगाया और कलकत्ता नगर निगम अधिनियम लाकर सरकारी हस्तक्षेप को बढ़ाया।** तो साथ ही, बंगाल विभाजन की घोषणा की । इसी क्रम में, बंगाल विभाजन का विरोध बंगाल बाहर भी होने लगा।
- वस्तुतः स्वदेशी आंदोलन शुरु हुआ जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसारित हुआ । इस तरह ब्रिटिश अधिकारियों की दमनकारी नीतियों से राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ। इन्हीं संदर्भों में यह कहा गयो कि 'कुछ बुरे शासक भी अच्छा परिणाम पैदा करते हैं।

(5) रिपन की नीतियाँ :-

- **वायसराय रिपन के समय 1883 में 'इल्बर्ट बिलं विवाद सामने आया ।** जिसने भारतीयों को एकजुट होने के लिए प्रेरित किया । वस्तुतः इल्बर्ट **बिल के तहत भारतीयों को भी यूरोपियों का मुकदमा सुनने का अधिकार दिया** गया।
- किंतु **अंग्रेजों ने संगठित होकर इस बिल का विरोध किया जिसे खेत विद्रोह के नाम से जाना जाता** है। अतःरिपन को यह बिल वापस लेना पड़ा। इस बिल के विवाद से स्पष्ट हुआ कि ब्रिटिश अभी भी नस्लवादी नीति पर चल रहे है और संगठित होकर विरोध करने से अपनी मांगो को मनवाया जा सकता है।

कांग्रेस की स्थापना से पूर्व की संस्थाएँ : -

(1) सर्वप्रथम 1836 में बंग भाषा प्रकाशक सभा की स्थापना हुई।

(2) 1838 में बंगाल में "लैंड होल्डर्स सोसाइटी" की स्थापना हुई जो जमींदारों की संस्था थी।

(3) 1851 में "ब्रिटिश इंडियन एसो" की स्थापना हुई जिसके प्रथम अध्यक्ष राधा कांत देव थे जिन्होंने ब्रिटिश संसद को पत्र लिखकर अनुरोध किया कि उच्च वर्ग के अधिकारियों के वेतन में कमी की जाए तथा नमक शुल्क एवं 'जल शुल्क' में कमी की जाए।

(4) 1866 में ईस्ट इंडिया एसो० की स्थापना दादाभाई नैरोजी ने लंदन में की जिसका उद्देश्य भारत के लोगों की समस्याओं और मांगो से ब्रिटिश जनमत को परिचित कराना था। और इंग्लैंड में भारतीयों के पक्ष में जन समर्थन हासिल करना था।

(5) 1867 में पूना सार्वजनिक सभा की स्थापना रानाडे एवं गणेश वासुदेव जोशी ने की।

(6) 1875 में शिशिर कुमार घोष ने कलकत्ता में इंडिया लीग की स्थापना की।

(7) 1876 में सुरेन्द्र नाथ बनर्जी एवं आनंद मोहन बोस ने इंडियन एसोसिएशन की स्थापना की। इस संस्था को कांग्रेस की पूर्वगामी संस्था कहा जाता हैं ,सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने कहा कि यह संस्था संयुक्त भारत की अवधारणा पर आधारित है।

- इसकी प्रेरणा हमे मेजिनी के इटली के एकीकरण के आदर्शों से मिलती है। इंडियन एसो० की वार्षिक बैठक Dec. 1885 में कलकत्ता हुई जिसमें सुरेन्द्र नाथ बनर्जी शामिल थे। इसी कारण वे Dec .1885 में बॉम्बे में हो रहे कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में शामिल नहीं पाए। इंडियन एसो० के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे :
  - **(a) भारत में जनमत तैयार करना ।**
  - **(b) हिंदू-मुस्लिम जनसंपर्क बढ़ाना।**
  - **(c) सिविल सेवा का भारतीयकरण करना ।**
- वस्तुतः इस परीक्षा के लिए उम्र सीमा में वृद्धि करना और भारत में भी परीक्षा आयोजित करना। इसके लिए ब्रिटिश सरकार के समक्ष अपना पक्ष रखने हेतु 'लाल मोहन घोष' को लंदन भेजा है गया ।

(8) 1884 में महास महाजन सभा की स्थापना वीर राघवाचारी, सुब्रमण्यम अय्यर एवं आनंद चारलू ने की।

कांग्रेस की स्थापना :

- कांग्रेस शब्द संयुक्त राज्य अमेरिका से लिया गया है जिसका अर्थ लोगों का समूह है। इसका आरंभिक नाम इंडियन नेशनल यूनियन रखा गया और प्रथम सम्मेलन पुणे में आयोजित करने की घोषणा की गई ।

- किंतु वहां प्लेग फैलने के कारण यह सम्मेलन बाम्बे में हुआ वहां प्लेग और दादा भाई नौरोजी के सुझाव पर इंडियन नेशनल कांग्रेस कर दिया गया।
- कांग्रेस का संस्थापक एक ब्रिटिश सेवानिवृत अधिकारी A.O. ह्युम था। इसके प्रथम अध्यक्ष व्योमेश चन्द्र बनर्जी थे। इसमें 72 लोग सदस्य बने।
- **कांग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष बदरुद्दीन तैय्यब थे जो 1887 में मद्रास अधिवेशनमें अध्यक्ष बने।**

कांग्रेस की स्थापना के संबंध में विवाद :

(i) सेफ्टी वाल्व सिद्धांत सुरक्षा कपाट सिद्धांत

- **इस सिद्धांत का प्रतिपादन लाला लाजपत राय ने किया।** उन्होंने ह्युम के जीवनी लेखक विलियम वेडरबर्न को आधार बनाकर अपनी अवधारणा 'यंग इंडिया' लेखों में प्रकाशित किया और कहा कि कांग्रेस लार्ड डफरिन के मस्तिष्क की उपज है।
- वस्तुतः भारतीय असंतोष को पहले ही जान लेने के लिए इस संस्था का गठन किया ।दरअसल लाला लाजपत राय ने कांग्रेस की यह आलोचना उसके उदारवादी नेतृत्व पर प्रहार करने के क्रम में की।

(ii) तड़ित चालक सिद्धांत

- **गोपाल कृष्ण गोखले ने इस सिद्धांत के तहत कांग्रेस की स्थापना को स्पष्ट करते हुए कहा कि सरकारी असंतोष से बचने के लिए भारतीय नेताओं ने ह्यूम का प्रयोग किया।**
- वस्तुतः कांग्रेस का संस्थापक यदि इस समय कोई अंग्रेज नहीं होता, तो आरंभ में ही यह संस्था ब्रिटिश दमन का शिकार हो सकती थी। अतः **ब्रिटिश दमन से बचने के लिए भारतीयों ने हयूम का नेतृत्व स्वीकार किया जो एक ब्रिटिश अधिकारी थे।**

समीक्षा / निष्कर्ष : -

- कांग्रेस की स्थापना के संदर्भ में सेफ्टी वाल्व सिद्धांत प्रमाणित नहीं होता क्योंकि वायसराय डफरिन को इसके गठन की सूचना बाद में मिली। साथ ही, ह्यूम एवं डफरिन के संबंध तनावपूर्ण थे।
- इतना ही नहीं डफरिन ने कांग्रेस की आलोचना करते हुए इसे मुट्ठी भर लोगों का समूह कहा। इस आधार पर इसे डफरिन के मस्तिष्क की उपज मानना तार्किक नहीं है।

वस्तुतः कांग्रेस की स्थापना को ऐतिहासिक विकास के संदर्भ में समझे जाने की जरूरत है।

- कांग्रेस से पूर्व ही अनेक राजनीतिक संस्थाओं की स्थापना हो चुकी थी। राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हो रहा था। ऐसे में भारतीय आशाओं एवं समस्याओंको एक मंच द्वारा प्रस्तुत करने के लिए अखिल भारतीय संगठन के रूप में कांग्रेस की स्थापना की गई।

उदारवादी आंदोलन

पृष्ठभूमि :-

- **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की आरंभिक राजनीति राष्ट्रीय आंदोलन में उदारवादी या नरमपंथी राजनीति के नाम जानी जाती है।**
- इसके प्रमुख नेता दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, गोपाल कृष्ण गोखले, जे .घोषाल, बदरुद्दीन तैय्यब आदि थे।

विचारधारा:

- उदारवादी कांग्रेसी नेता ब्रिटिश न्यायप्रियता में विश्वास करते थे। अर्थात् ब्रिटिश संसद एवं जनता में इनका अटूट विश्वास था । अतः यह संवैधानिक मार्गो पर चलकर अधिकार प्राप्त करने पर बल देते थे।
- उदारवादियों का मानना था कि भारतीय जनता अशिक्षित है। अत :इसे आंदोलन शामिल नहीं करना चाहिए। इस तरह, भारत की आम जनता में इनका विश्वास नहीं था।
- **उदारवादियों का मानना था कि ब्रिटिश शासन भारत में एक वरदान है और यह भारत को धीरे-धीरे लोकतांत्रिक शासन की ओर ले जाएगा।** इसलिए उन्होनें कभी ब्रिटिश साम्राज्य से अलग होने की बात नहीं की। बल्कि ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत स्वशासन की प्राप्ति पर बल दिया।
- उदारवादियों का मानना था कि इंग्लैंड में मौजूद ब्रिटिश रूल बेहद प्रगतिशील है। वहाँ संसदीय शासन प्रणाली है जहाँ जनता के अधिकार सुरक्षित हैं नागरिकों को अपनी मांग रखने का अधिकार है, प्रेस की स्वतंत्रता है, आर्थिक प्रशासनिक स्तर पर नागरिकों के साथ कोई भेदभाव नहीं है, वैज्ञानिक तकनीकी शिक्षा मौजूद है।
- अतः इंग्लैंड का आर्थिक औद्योगिक विकास हो रहा है। इससे वहाँ के लोगों के जीवन में समृद्धि आ रही है। इस तरह इंग्लैंड में स्थापित ब्रिटिश रूल प्रगतिशील हैं, और यह लोक-कल्याण स्वरूप से युक्त हैं। जबकि भारत में भी ब्रिटिश नियंत्रण है।
- यहाँ ब्रिटिश अधिकारियों के होते हुए भी ब्रिटिश रूल की स्थापना नहीं की गयी है, यहाँ लोकतांत्रिक शासन नहीं है, प्रतिनिधि संस्थानों में भारतीयों ककी पर्याप्त भागीदारी नहीं है। भारतीयों को नागरिक अधिकारों से वंचित रखा गया है। प्रेस पर सरकारी नियंत्रण है ।
- प्रशासनिक सेवाओं में भारतीय नागरिकों के साथ भेदभाव किया जाता है। वैज्ञानिक - तकनीकी शिक्षा का प्रसार नहीं है। ब्रिटिश नीतियों की वजह से भारत में कृषि का पिछड़ापन है।
- हस्तशिल्प उद्योगों का पतन हो गया है। अतः गरीबी, ऋणग्रस्तता और अकाल की बारंबारता मौजूद है। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था एक ऋणग्रस्त एवं पिछड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में जानी जाती है। वस्तुतः इन सबका कारण भारत में अंग्रेजों द्वारा स्थापित अनब्रिटिश रूल है।

(v)समाजवादी विचारधारा के विकास ने भी क्रांतिकारी गतिविधियों को प्रेरित किया । वस्तुतः 1917 की रूसी साम्यवादी क्रांति की सफलता से प्रेरित होकर भारत में भी युवा वर्ग उत्साहित हुआ और क्रांति के माध्यम से अपने अधिकार प्राप्ति के लिए आगे बढ़ा।

(vi) गाँधी के असहयोग आंदोलन की अचानक वापसी से युवा वर्ग को निराशा हुई। अब उसे ब्रिटिश शासन के विरोध का कोई विकल्प नजर नहीं आया। अतः एकबार फिर बम और पिस्तौल की राजनीति में लोगों का विश्वास जागा।

कार्यक्रम :

(i) अलोकप्रिय ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या करना अर्थात् जिन ब्रिटिश अधिकारियों ने भारतीयों के प्रति दमनात्मक कार्यवाही की और दुर्व्यहार किया, उनकी हत्या करना।

(ii) बम बनाना एवं विदेशों से हथियार प्राप्त करना।

(ii) गुप्त समीतियों की स्थापना कर सशस्त्र कार्यवाही करना।

(iv) स्वदेशी डकैती डालना।

(v)क्रांतिकारी विचारों के प्रसार हेतु पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशनकरना। जैसे- वीरेन्द्र कुमार चटोपाध्याय नें'तलवार' नामक पत्र का संपादन किया ।

(vi) सैनिक शिक्षा और धार्मिक कार्यक्रम द्वारा लोगों में राष्ट्रवादी भावना पैदा करना और उन्हें क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए तैयार करना ।

प्रश्न - क्रांतिकारी, जो हार्डिंग बम काण्ड में शामिल नहीं था-

A. मास्टर अमीरचंद B. भगवती चरण बोहरा

C. भाई बालमुकुंद D. अवध बिहारी

उत्तर – B

क्रांतिकारी विचारधारा :-

(iv) 19 वीं सदी के क्रांतिकारी केवल विदेशी शासन से मुक्ति चाहते थे। अर्थात् राष्ट्रवादी थे किंतु 10 वीं सदी में 1920 के पश्चात् **क्रांतिकारी समाजवादी विचारधारा से युक्त हो गए जिनमे प्रमुख थे भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद ।**

(v) इन क्रांतिकारियों ने स्पष्ट किया कि हमे उस व्यवस्था को समाप्त करना है जिसमें लोगों का शोषण होता है अर्थात् राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ समाजवादी शासन की स्थापना का लक्ष्म घोषित किया । इसी क्रम में रेलवे जहाज निर्माण इकाईयों जैसे परिवहन के साधन एवं लौह उद्योग जैसी इकाइयों के राष्ट्रीयकरण पर बल दिया।

(ii) क्रांतिकारियों ने कहा कि भारत में संघर्ष तब तक चलता रहेगा जब तक मुट्ठी भर शोषक अपने लाभ के लिए जनता के श्रम का शोषण करते रहेंगे। इस बात का कोई महत्व नहीं कि शोषक अंग्रेज पूँजीपति है या भारतीय अथवा दोनो का गठबंधन। इस तरह क्रांतिकारियों ने यह स्पष्ट किया कि बम और पिस्तौल की राजनीति में उनका विश्वास नहीं है। उनका लक्ष्य तो किसान एवं मजदूरों के शासन की स्थापना करना है

(iii) रामप्रसाद बिस्मिल ने अपने हिरासत की अवधि के दौरान कहा कि युवा पिस्तौल का साथ छोड़ दे और जनता के साथ खुला आंदोलन चलाए तथा सभी राजनीतिक दल कांग्रेस के नेतृत्व में एकजुट हो। उन्होंने समाजवाद में आस्था प्रकट करते हुए कहा कि प्रकृति की संपदा पर सबका अधिकार है।

(iv) भगत सिंह भी अपने चिंतन में समाजवाद के समर्थक थे। उनके अनुसार क्रांति का तात्पर्य जनता द्वारा जनता के लिए परिवर्तन करना था। उन्होंने कहा कि क्रांति के लिए रक्तरंजित संघर्ष आवश्यक नहीं है। व्यक्तिगत दुश्मनी के लिए भी उसमें कोई जगह नहीं है यह बम और पिस्तौल की उपासना नहीं है। क्रांति से हमारा आशय यह है कि अन्याय पर आधारित वर्तमान व्यवस्था समाप्त होनी चाहिए। इस तरह क्रांतिकारियों ने क्रांति को परिभाषित किया।

(v) भगत सिंह धर्मनिरपेक्ष क्रांतिकारी थे। उन्होंने भारत नौजवान सभा की स्थापना की और इसके लिए यह नियम बनाया कि इसके सदस्य ऐसे किसी संगठन या पार्टी से किसी तरह का संबंध नहीं रखेंगे जो सांप्रदायिकता का प्रचार करती हो। वे धर्म को जनता का व्यक्तिगत पहलू बताते थे। उन्होंने जनता को अंधविश्वास एवं धर्म के बंधन से होने पर बल दिया।

- इसी क्रम में, उन्होंने धर्म और उससे जुड़ी हुई अवधारणाओं की आलोचना की और नास्तिकता का मार्ग अपनाया। ईश्वर के अस्तित्व में उनकी आस्था समाप्त हो गयी। इसी क्रम में उन्होंने घोषित किया कि प्रगति के लिए संघर्ष करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अंधविश्वासों की आलोचना करनी ही पड़ेगी।

(vi) 20 वीं सदी के क्रांतिकारी आंदोलन में महिलाओं की भूमिका भी दिखाई देती है। इसमें 'प्रीतिलता वाडेकर', 'शांति घोष', 'वीणा दास', 'कल्पना दत्ता', 'सुनीता चौधरी' आदि का नाम उल्लेखनीय है।

प्रसार :

(I) देश में :

- सावरकर बंधुओं ने 1904 में मित्र मेला एवं 'अभिनव भारत' नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की। महाराष्ट्र में पहली क्रांतिकारी घटना 1897 में प्लेग कमिश्नर रैण्ड की गोली मारकर की गयी हत्या थी। वस्तुतः चापेकर बंधुओं ने (बालकृष्ण एवं दामोदर चापेकर) तिलक के पत्र'केसरी' में छपे लेख से प्रेरित होकर यह कार्य किया था।
- बंगाल में 1902 में अनुशीलन समिति की स्थापना हुई जिसमें 'बारीन्द्र कुमार घोष' एवं 'जतिन नॉथ' की भूमिका महत्वपूर्ण थी।
- बंगाल में 'बारीन्द्र कुमार घोष' एवं 'उपेन्द्रनाथ दत्त' ने 'युगांतर' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन किया। जिसमें कहा गया कि 'बल को बल द्वारा' ही रोका जा सकता है।

(iv) पंजीकरण या प्राकृतिक नागरिकता के पांच वर्ष के दौरान नागरिक को किसी देश में दो वर्ष की कैद हुई हो।

(v) नागरिक सामान्य रूप से भारत के बाहर सात वर्षों से रह रहा हो।

एकल नागरिकता

- ***भारत में एकल नागरिकता है।***
- भारतीय संविधान संघीय है और दोहरी राज पद्धति को अपनाया लेकिन इसमें केवल एकल नागरिकता की व्यवस्था है।
- ***लगातार 7 साल बाहर रहने पर नागरिकता समाप्त हो जाती है।***
- नागरिकता प्राप्त करने के लिए शर्ते निर्धारित करने वाला निकाय संसद है।

अध्याय - 5

मौलिक अधिकार

भारत के संविधान के **भाग तीन में अनु. 12 से 35 तक में मौलिक अधिकारों से सम्बन्धित** प्रावधान है।

मौलिक अधिकारों की अवधारणा को **U.S.A से** अपनाया गया है। भारत की व्यवस्था में मौलिक अधिकारों के निम्नलिखित महत्व हैं।

(1) मौलिक अधिकारों के माध्यम से राजनीतिक एवं प्रशासनिक लोकतंत्र की स्थापना होती है। अर्थात् कोई भी नागरिक प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में राजनीति में भागीदारी कर सकता है और प्रत्येक नागरिक अपनी योग्यता के आधार पर प्रशासन का हिस्सा बन सकता है।

(2) मौलिक अधिकारों के माध्यम से सरकार की तानाशाही अथवा व्यक्ति विशेष की इच्छा पर नियंत्रण स्थापित होता है।

(3) मौलिक अधिकारों के माध्यम से व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं सुरक्षा स्थापित होती हैं।

(4) मौलिक अधिकारों के माध्यम से विधी के शासन की स्थापना होती है।

(5) मौलिक अधिकारों के माध्यम से अल्पसंख्यक और दुर्बल वर्ग को सुरक्षा प्राप्त होती है।

(6) मौलिक अधिकारों के माध्यम से पंथनिरपेक्ष राज्य की अवधारणा को सुरक्षा प्राप्त होती हैं और इसको बढ़ावा मिलता है।

(7) मौलिक अधिकार सामाजिक समानता एवं सामाजिक न्याय यात्रा की स्थापना करते हैं।

(8) मौलिक अधिकारों के माध्यम से व्यक्ति की गरिमा एवं सम्मान की रक्षा होती है।

(9) मौलिक अधिकार सार्वजनिक हित एवं राष्ट्र की एकता को बढ़ावा देते हैं।

मौलिक अधिकारों की विशेषताएँ

(1) **मौलिक अधिकार न्यायालय में वाद योग्य हैं अर्थात् मौलिक अधिकारों का उल्लंघन होने पर सुरक्षा के लिए न्यायालय में अपील की जा सकती है।**

(2) कुछ मौलिक अधिकार केवल नागरिकों से सम्बंधित है। जबकि कुछ मौलिक अधिकार व्यक्ति से संबंधित है।

(3) **मौलिक अधिकारों पर युक्तियुक्त प्रतिबन्ध लगाया गया है।**

(4) मौलिक अधिकार राज्य के विरुद्ध प्रदान किए गये है। इसलिए ये राज्य के लिए नकारात्मक जबकि व्यक्ति के लिए सकारात्मक है।

(5) ये राज्य के प्राधिकार की कम करते है और व्यक्ति के सम्मान को बढ़ावा देते हैं।

(6) संसद को भी यह अधिकार नही कि वह मौलिक अधिकार से सम्बंधित मूल ढाचे में परिवर्तन कर सके। (नकारात्मक परिवर्तन)

(7) आपातकाल के समय अनु० 20 और 21 के तहत प्राप्त मौलिक अधिकारों को छोड़कर अन्य मौलिक अधिकार निलंबित किए जा सकते हैं।

(8) मौलिक अधिकार शत्रु देश के नागरिक तथा अन्य देशों को प्राप्त नहीं हैं।

प्रश्न. निम्नांकित कथनों पर विचार कीजिए?

A. मूलअधिकारों एवं राज्य नीति के निदेशक तत्वों को यथासंभव प्रभावी बनाने के लिए साम्य संरचना का सिद्धांत अपनाया गया है।

B. 1980 के मिनर्वा मिल्स केस में उच्चतम न्यायालय ने अनुच्छेद 14 एवं 19 में उल्लेखित मूल अधिकारों पर अनुच्छेद 39(ख) एवं (ग) में उल्लेखित राज्य नीति के निदेशक तत्वों की वरीयता से संस्थापित की है

कूट -

a. केवल A सही है।
b. केवल B सही है।
c. (A) एवं (B) दोनों सत्य है।
d. (A) एवं (B) दोनों गलत है।

उत्तर - c

मौलिक अधिकारों की आलोचना -

(1) इनका कोई स्पष्ट दर्शन नहीं है। अधिकांश मौलिक अधिकारों की व्याख्या उच्च न्यायालय एवं सर्वोच्च न्यायालय पर छोड़ दी गई है।

(2) इनमें स्पष्टता का अभाव है और ये सामान्य लोगों की समझ से बाहर है।

(3) मौलिक अधिकार आर्थिक व्यय की स्थापना नहीं करते।

(4) **आपातकाल के समय इनका निलबन हो जाता है।**
note- अनुच्छेद - 21 का निलंबन किसी भी परिस्थिति में नहीं हो सकता।

(5) निवारक निरोध जैसे प्रावधान मौलिक अधिकारों को कमजोर करते हैं और राज्य को नागरिकों पर हावी कर देते हैं।

(6) **संसद के अधिकार हैं कि अनुच्छेद - 368 का प्रयोग कर इनमे कमी कर सकती है।**

(7) मौलिक अधिकारों के सम्बन्ध में मिलने वाला न्याय अत्यधिक महंगा हैं तथा प्रकिया जटिल है।

मौलिक अधिकार

अनु. 12 राज्य - (i) संघ सरकार एवं संसद (ii)राज्य सरकार एवं विधानमंडल (iii)स्थानीय प्राधिकरण / प्राधिकारी (iv)सार्वजनिक अधिकारी	**अनु. 13** कोई भी विधि जो मौलिक अधिकारों का अतिक्रमण करती है तो अतिक्रमण की सीमा तक शून्य हो जाएगी। **विधि** (i) स्थाई विधि- संसद एवं विधानमण्डल द्वारा निर्मित
अन्य वे निजी संस्थाए जो राज्य के लिए कार्य करती हो	(ii) अस्थाई विधि - जब राष्ट्रपति व राज्यपाल अध्यादेश जारी करें। (iii) कार्यपालिका के द्वारा निर्मित नियम/विधि (iv) ऐसी विधि जो संविधान पूर्व की हो

प्रश्न. निम्न में से कौन सा मूल अधिकार भारतीय संविधान में नागरिकों को नहीं दिया गया है?

a. देश के किसी भाग में बसने का अधिकार
b. लिंग समानता का अधिकार
c. सूचना का अधिकार
d. शोषण के विरुद्ध अधिकार

उत्तर - c

(1) समता का अधिकार :- (अनु. 14-18)

i. विधि के समक्ष एवं विधियों का समान संरक्षण-

संविधान के अनु० 14 में विधि के समक्ष समता एवं विधियों के समान संरक्षण का प्रावधान हैं। **विधी के समक्ष समता की अवधारणा ब्रिटेन से** प्रभावित हैं। विधी के समक्ष समता से आशय हैं, विधी सर्वोच्च होगी। और कोई भी विधिक व्यक्ति विधी से ऊपर नही होगा।

विधी के समक्ष समता की निम्नलिखित विशेषताए होती हैं-

(a) कोई भी व्यक्ति (गरीब, अमीर, प्राधिकारी अथवा सामान्य व्यक्ति, सरकारी संगठन गेर सरकारी संगठन) विधी से ऊपर नही होगा।

(b) किसी भी व्यक्ति के लिए अथवा व्यक्ति के पक्ष में विशेषाधिकार नहीं होंगे।

(c) न्यायालय सभी व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार करेगा।

विधि के समक्ष समता के सिद्धांत के भारत के संबंध में निम्नलिखित अपवाद है।

(i) भारत का राष्ट्रपति अथवा राज्यों के राज्यपाल पर पद पर रहते हुए किसी भी प्रकार का आपराधिक मुकदमा नही चलाया जाएगा।

(ii) राष्ट्रपति अथवा राज्यपाल को इन पदों पर रहते हुए लिए गए निर्णयों के सम्बन्ध में न्यायालय में प्रश्नगत नही किया जायेगा।

(iii) कोई व्यक्ति यदि संसद अथवा राज्य विधानमंडल की कार्यवाही को उसी रूप में प्रकाशित करता हैं तो उसे दोषी नही माना जायेगा।

(iv) संसद अथवा राज्य विधानमंडल के सदस्यों को सदन की कार्यवाही के आरम्भ होने के 40 दिन पूर्व तथा कार्यवाही के समाप्त होने के 40 दिन बाद तक किसी दीवानी मामले में न्यायलय में उपस्थित होने के लिए बाध्य नही किया जायेगा।

(v) विदेशी राजनयिक अथवा कूटनीतिज्ञ फौजदारी मामलों एवं दीवानी मामलों से मुक्त होंगे ।

(vi) अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे – UNO, ADB, WB, IMF आदि के अधिकारी एवं कर्मचारी दीवानी एवं फौजदारी मामलों से मुक्त होंगे ।

विधियों के समान संरक्षण की अवधारणा U.S.A. की देंन है ।

विधियों के सामान संरक्षण से आशय हैं । "समान के साथ सामान व्यवहार तथा असमान के साथ असमान व्यवहार"

इस अवधारणा को सकारात्मक माना जाता हैं, क्योंकि इसके माध्यम से किसी के साथ अन्याय नही होता ।

भारत में बाल सुधार कानून, अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लिए विशेष कानून, महिलाओ के लिए विशेष कानून इसका उदाहरण हैं ।

<u>कुछ आधारो पर विभेद का प्रतिषेध</u>

- अनु. 15 में यह प्रावधान हैं कि राज्य किसी नागरिक के साथ केवल धर्म, मूल, वंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान को लेकर विभेद नही करेगा । यह व्यवस्था राज्य और व्यक्ति दोनों पर समान रूप से लागू होती हैं ।
- इसमें प्रावधान हैं कि राज्य के द्वारा दुकानों, सार्वजनिक भोजनालयो, होटल, मनोरंजन के स्थान आदि पर उपर्युक्त आधारों पर भेदभाव नही किया जायेगा ।
- इसके अलावा राज्य निधि से पोषित कुओ, तालाबो, स्नानघाट आदि का प्रयोग करने से किसी व्यक्ति को उपर्युक्त आधारों पर रोका नही जायेगा।
- इसमें यह भी प्रावधान हैं कि राज्य महिलाओ एवं बच्चो के लिए विशेष व्यवस्था कर सकता हैं ।
- इसमें यह भी व्यवस्था है कि राज्य SC,ST तथा शैक्षणिक एवं सामाजिक दृष्टि से पिछड़े हुए वर्गों के लिए शैक्षणिक संस्थाओ में आरक्षण कर सकता हैं ।
- इसमें प्रावधान है कि राज्य आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए शैक्षणिक संस्थाओ में आरक्षण कर सकता है।

<u>लोक नियोजन के सम्बन्ध में अवसर की समता (अनु. - 16)</u>

अनु. 16 में यह प्रावधान कि राज्य के अधीन किसी भी पद पर नियुक्ति के सम्बन्ध में अवसर की समता होगी। केवल धर्म, वंश, जाति, लिंग तथा जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाएगा।

लेकिन निम्नलिखित मामलो में अवसर की समता के सिद्धांत का उल्लंघन किया जा सकता है –

(1) संसद किसी विशेष रोजगार के लिए निवासी की शर्त शामिल कर सकती है। इसी प्रावधान के तहत अनेक राज्यों में राज्य के मूल निवासियों को विशेषाधिकर प्रदान किए गए है।

(2) किसी धर्म से संबंधित नियुक्ति के मामले में धर्म विशेष के होने की सीमा लगाई जा सकती है।

(3) विशेष वर्ग के लिए अलग व्यवस्था की जा सकती है। जैसे- SC, ST, शैक्षणिक और सामाजिक दृष्टि से पिछड़ा वर्ग तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग तथा कुछ राज्यों में महिलाओ के सम्बन्ध में विशेष प्रावधान है।

<u>अस्पृश्यता का उन्मूलन (अनु.-17)</u>

संविधान के अनु. 17 में यह प्रावधान है कि अस्पृश्यता को समाप्त किया जाता है और किसी भी रूप में अस्पृश्यता को बढ़ावा देना दण्डनीय अपराध होगा। इसके संबंध में दंड वह होगा जो संसद विधी द्वारा निर्धारित हो। संविधान में अस्पर्शता के संबंध में विशेष व्यवस्था नही की गई ।

अतः संसद के द्वारा नागरिक अधिकार सुरक्षा अधिनियम-1955 के माध्यम से अस्पृश्यता को समाप्त किया।

नागरिक अधिकार सुरक्षा अधिकार के अनुसार निम्नलिखित क्रियाकलापों को अपराध माना गया -

(a) सार्वजानिक पूजा स्थलों में प्रवेश से रोकना।

(b) किसी भी तरीके से अस्पृश्यता का बचाव करना।

(c) सार्वजनिक स्थल जैसे - दुकान, होटल, मनोरंजन के साधन आदि के उपभोग से रोकना।

(d) सार्वजनिक संस्थान जैसे – शिक्षण संस्थान, चिकित्सालय आदि में प्रवेश से वंचित करना।

(e) अनुसूचित जाति का जातिसूचक शब्द के माध्यम से अपमान करना।

(f) किसी व्यक्ति को कोई सेवा अथवा वस्तु देने से इंकार करना।

- उपर्युक्त नियम राज्य एवं व्यक्ति दोनों से सम्बंधित हैं । अर्थात् न तो राज्य के द्वारा और ना ही व्यक्ति के द्वारा इनका उल्लंघन किया जायेगा ।
- उपर्युक्त कानून के सम्बन्ध में राज्य का यह कर्तव्य हैं कि वह लोगों को इस सम्बन्ध में सुरक्षा प्रदान करे।

<u>उपाधियों का अंत (अनु. 18)-</u>

संविधान के अनु. 18 में उपाधियों के सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रावधान है –

(a) राज्य सेवा एवं विद्या को छोड़कर अन्य किसी भी प्रकार की उपाधि प्रदान नही करेगा ।

(b) भारत का कोई नागरिक विदेशी राज्य से भी किसी प्रकार की उपाधि प्राप्त नही करेगा।

(c) यदि कोई विदेशी नागरिक राज्य के अधीन लाभ के पद पर कार्यरत हैं तो उसे विदेशी राज्य से उपाधि प्राप्त करने से पहले राष्ट्रपति से अनुमति लेनी होगी।

(d) राज्य के अधीन लाभ के पद पर कार्यरत कोई नागरिक किसी विदेशी राज्य से कोई उपहार अथवा उपलब्धी प्राप्त करता है तो राष्ट्रपति से अनुमति लेनी होगी।

- ***1996 में सर्वोच्च न्यायालय ने यह निर्णय दिया था कि पद्म पुरस्कार उपाधि नही हैं, लेकिन इन्हें प्राप्त करने वाला व्यक्ति इनका प्रयोग अपने नाम में उपसर्ग अथवा प्रत्यय के रूप में नही कर सकता।***

(5) संस्कृति और शिक्षा सम्बन्धी अधिकार (अनु. 29 व 30):-

- अनु० 29 में यह प्रावधान कि भारत के किसी क्षेत्र के किसी निवासी नागरिको अथवा इसके किसी भाग की जिसकी अपनी विशेष भाषा, लिपि या संस्कृति है। तो उसे बनाये रखने का अधिकार होगा।
- अनु. 29 धार्मिक अल्पसंख्यको से सम्बंधित नही है। यह भाषा लिपि अथवा संस्कृति के आधार पर अल्पसंख्यको की बात करता हैं ।
- यह व्यवहारिक रूप में सभी धर्मो एवं सभी नागरिकों पर लागू होता हैं । लेकिन ऐसे नागरिकों को अधिकार नही देता, जो नागरिक तो हैं लेकिन निवासी नही हैं ।
- **अनु.29 में यह भी प्रावधान हैं कि राज्य के द्वारा संचालित तथा राज्य निधि के आधार पर वंचित नही किया जायेगा।**
- अनु. 30 :- शिक्षा संस्थाओं की स्थापना एवं उनका प्रशासन चलाने का अल्प संख्यक वर्गों का अधिकार -
- धर्म या भाषा आधार पर आधारित सभी अल्पसंख्यक वर्गों को को अपनी रूची के शिक्षण संस्थानों की स्थापना करने एवं इनका प्रशासन चलाने का अधिकार है ।
- अल्पसंख्यक वर्ग ले द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थान को यह सुनिश्चित करना होगा कि संन्स्थान के लिए अर्जित चल अथवा अचल संपत्ति किसी प्रचलित विधि का अतिक्रमण करे ।
- राज्य ऐसे किसी शिक्षण संस्थान को यदि सहायता देता हैं तो धर्म अथवा भाषा के आधार पर भेदभाव नही करेगा ।
- अनु. 30 राज्य को यह अधिकार भी देता हैं कि राज्य से सहायता प्राप्त शिक्षण संस्थान धर्म भाषा से सम्बंधित शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा प्रणाली को ही अपनाए ।

कुछ विधियों की सुरक्षा से सम्बंधित प्रावधान :-

1. संपदाओ आदि के अर्जन से सम्बंधित उपबंध करने वाली विधियों की सुरक्षा (अनु. 31-A)

अनु. 13 के तरह भी राज्य को अधिकार हैं कि-

(i) वह किसी संपदा का अर्जन कर सकता है। (लोकहित में)

(ii) किसी संपत्ति का प्रबंध लोक हित में स्वयं कर सकता है।

(iii) दो या दो से अधिक निगमों को लोक हित में मिला सकता है।

(iv) किसी निगम के प्रबंध को, सचिवो, निदेशको, या उसके शेयर धारकों के अधिकार में कमी या वृद्धि कर सकता है।

(v) किसी खनिज संसाधन या खनीज तेल को प्राप्त करने या खोजने के उद्देश्य से भूमि का अधिग्रहण कर सकता है। और इसके लिए किसी करार को समय से पहले समाप्त किया जा सकता है।

इस सम्बन्ध में यदि अनु.14 व 19 का अतिक्रमण भी होता है तो भी ऐसे कार्य पर नकारात्मक प्रभाव नही पड़ेगा ।

2. कुछ अधिनियमों और विनियमों का विधिमान्यकरण :- (अनु. 31-B)

राज्य के द्वारा किसी प्रकार की विधि बनाकर नोवीं अनुसूची में शामिल की जाती है । तो ऐसी विधि विधिमान्य होगी और यह नही समझा जायेगा कि यह भाग 3 का अतिक्रमण करती हैं ।

3. कुछ नीति निदेशक तत्वों को प्रभावित करने वाली विधियों की सुरक्षा :- (अनु. 31-c)

अनु. 13 की किसी बात के होते हुए कोई विधि जो भाग 4 के सभी सिद्धांतो या कुछ सिद्धांतो को प्रभावी करने के लिए लागू की जाती हैं । तो ऐसी विधि इस आधार पर शून्य नही समझी जाएगी कि यह अनु. 14 अथवा अनु. 19 का अतिक्रमण करती हैं ।

यदि ऐसी कोई विधि किसी राज्य विधानमंडल के द्वारा बनाई जाती हैं तो तब ही लागू होगी, जब राष्ट्रपति इसका अनुमोदन करे ।

6. संवैधानिक उपचारों का अधिकार (अनु. 32)

सशस्त्र बलों के मौलिक अधिकारो के सम्बन्ध में प्रावधान

संसद को यह अधिकार हैं कि भाग 3 के द्वारा प्राप्त अधिकारी को निम्नलिखित के लिए सीमित कर सकती हैं-

(i) सशस्त्र बलों के सदस्यों

(ii) लोक व्यवस्था बनाये रखने वाले सदस्यों

(iii) सूचना संगठनों के सदस्यों

उपर्युक्त के सम्बन्ध में इनको सहयोग देने वाले नाई, मोची, मैकेनिक, ड्राईवर, बावर्ची आदि पर भी प्रतिबन्ध लागु होंगे । यदि ये उपर्युक्त को सेवा प्रदान करते हैं ।

मार्शल लॉ अथवा सैनिक शासन के क्षेत्र में मौलिक अधिकार पर प्रतिबन्ध (अनु.34)

(1) अधित्यजन का सिद्धांत - इससे आशय हैं कि जिन नागरिकों अथवा व्यक्तियों को मौलिक अधिकार प्रदान किए गए हैं । वे मौलिक अधिकारों का त्याग नही कर सकते । उदा. अनु. 21 प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता का अधिकार देता हैं । लेकिन इससे यह आशय नही हैं कि कोई व्यक्ति आत्महत्या करने का अधिकार रखता हैं ।

(2) पृथक्करणीयता का सिद्धांत - संसद अथवा राज्य विधानमंडल के द्वारा बनाई गई कोई विधि मौलिक अधिकारों के अतिक्रमण की सीमा तक ही शून्य होगी । अर्थात् उस विधि के केवल उन प्रावधानों को ही शून्य माना जायेगा । जो मौलिक अधिकारों का अतिक्रमण करते हो ।

(3) आच्छादन का सिद्धांत - यह सिद्धांत तय करता हैं कि संविधान के लागु होने से पूर्व की कोई विधि यदि मौलिक अधिकारों का अतिक्रमण करती हैं तो ऐसी विधि सक्रिय नही रहेगी । अर्थात् विधि शून्य नही होगी । लेकिन उसका प्रभाव समाप्त हो जायेगा ।

- भारत में ना तो एक दलीय प्रणाली रही हैं, न ही द्विदलीय और न ही बहुदलीय प्रणाली भारत में राष्ट्रीय दलों के अलावा क्षेत्रीय दलों का भी प्रभाव हैं।
- 52 वें संविधान संशोधन अधिनियम 1985 द्वारा सांसदों तथा विधायिकों द्वारा एक राजनीतिक दल से दूसरे दल में दल परिवर्तन के आधार पर निरर्हता के बारे में प्रावधान किया गया है।
- किसी सदन का अध्यक्ष दसवीं अनुसूची के उपबंधों को प्रभावी करने के लिए नियम बनाने की शक्ति रखता है, ऐसे नियम सदन के समक्ष 30 दिन के भीतर रखना आवश्यक है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

1. किस राजनीतिक विश्लेषक ने भारत में एकदलीय व्यवस्था को एक दलीय शासन व्यवस्था अथवा कांग्रेस व्यवस्था कहा हैं?
   A. भीखू पारेख　　B. पॉल ब्रास
   C. ग्रेनविले ऑस्टिंन　　D. रजनी कोठारी
   उत्तर - D

2. निम्न में से कौन भारत मे क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की विशेषताओं को इंगित करते हैं ?
   A. क्षेत्रीय राजनीतिक दल, उस क्षेत्र की संस्कृति को प्रदर्शित करते हैं।
   B. क्षेत्रीय राजनीतिक दल, मत प्राप्त करने हेतु क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग करते हैं।
   C. क्षेत्रीय राजनीतिक दल, राष्ट्रीय दलों के साथ चुनाव के समय गठबंधन करते हैं।
   D. क्षेत्रीय राजनीतिक दल, स्वतंत्रता के बाद अस्तित्व में आए हैं।
   नीचे दिए गए कूटों की सहायता से सही उत्तर का कथन करें
   1. A और B　　2. A, B एवं C
   3. A, C और D　　4. केवल B
   उत्तर- 2

3. निर्वाचन आयोग द्वारा बनाए गए मापदंडों के अनुसार, किसी राजनीतिक दल को राष्ट्रीय दल के रूप में मान्यता प्राप्त करने के लिए कम से कम कितने राज्य में सीट जितना अनिवार्य हैं ?
   A. 3　　B. 4
   C. 5　　D. 6
   उत्तर – B

4. निम्न में से कौन सा कार्य केवल एक राजनीतिक दल से संबंधित है न कि दबाव समूह से ?
   A. संगठन के लिए धन एकत्रित करना
   B. स्वयं के चिन्ह पर चुनाव लड़ना
   C. जनसभाएं एवं रैलियाँ करना
   D. पम्पलेट्स छापना
   उत्तर - B

5. निम्न राजनीतिक दलों पर विचार कीजिए :-
   A. डी.एम.के　　B. सी.पी.आई (एम)
   C. ए.जी.पी　　D. टी.डी.पी
   इनके निर्माण का सही क्रम क्या होगा ?
   A. 1-2-4-3　　B. 1-2-3-4
   C. 2-1-4-3　　D. 4-3-2-1
   उत्तर - A

6. निम्न में से किसने भारत में दलरहित लोकतंत्र का समर्थन किया था ?
   A. महात्मा गांधी
   B. एम.एन. राय
   C. जयप्रकाश नारायण
   D. आचार्य विनोबा भावे
   उत्तर- C

7. संसद की कार्य प्रणाली की मूल समस्या क्या है ?
   A. प्रभावी दलीय व्यवस्था का अभाव
   B. स्वतंत्र एवं कुशल नौकरशाही का अभाव
   C. स्पष्ट संवैधानिक प्रावधानों का अभाव
   D. विधायिका की स्वतंत्रता का अभाव
   उत्तर - B

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

whatsapp - https://wa.link/bc7sin 1 web.- https://bit.ly/ras-pre-notes

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

Our Selected Students

Approx. 137+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
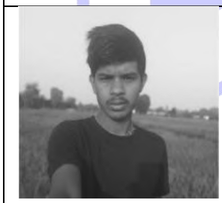	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
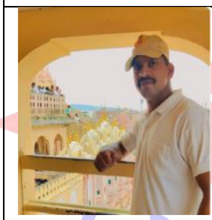	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota

And many others……

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp करें – https://wa.link/bc7sin

Online order करें – https://bit.ly/ras-pre-notes

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE